पाक्षिक

मूल्य ₹ ५

पाथेय कण

श्रावण शु.१३, युगाब्द ५१२२ वि.२०७७,१ अगस्त, २०२०

विजयनगर साम्राज्य के अजेय राजा

कृष्णदेव राय

विजय नगर साम्राज्य का गौरवशाली इतिहास

विट्ठल मंदिर परिसर में संगीतमय खम्भों वाला मण्डप

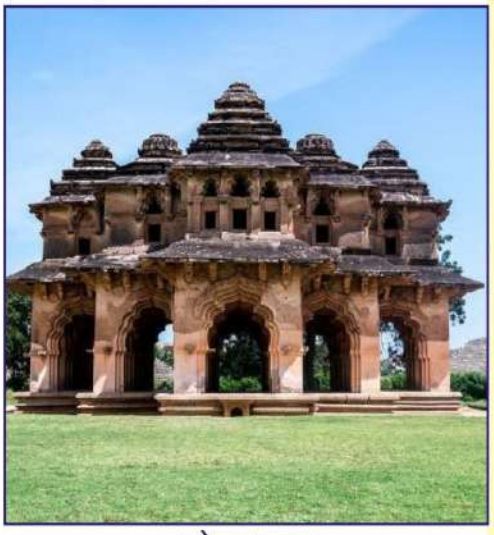

लोटस महल

विट्ठल मंदिर में भगवान विष्णु का रथ

कृष्ण मंदिर, हम्पी

हजारा राम मंदिर, हम्पी

उग्र नरसिंह, हम्पी

।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

**मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।**

पाक्षिक
पाथेय कण

श्रावण शु. १३, युगाब्द ५१२२, वि.२०७७
१ अगस्त २०२०
वर्ष ३६ : अंक ०६

परम सुहृद पाठक-गण,

सप्रेम नमस्कार।

पाथेय कण के १५ वर्षीय सदस्यों को जुलाई (द्वितीय) अंक डाक से भेजे गये तथा वार्षिक सदस्यों को ट्रांसपोर्ट से जिलानुसार भेजे गये थे। जो आपको प्राप्त हो गये होंगे। इस संबंध में आपका कोई सुझाव हो तो अवश्य जानकारी दें।

सभी पाठकों, उनके परिवार तथा प्रियजनों को पाथेय कण की ओर से भारत के **७४वें स्वतन्त्रता दिवस** की हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय श्रीराम।

आपका
प्रबंध सम्पादक

सहयोग राशि

वार्षिक ₹ 100/- पन्द्रह वर्ष ₹1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 7976582011, 9414447123, 9929722111

Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

प्रजातन्त्र के लिए खतरे की घंटी

पिछले एक पखवाड़े से भी अधिक समय हो गया है, राजस्थान का शासन सचिवालय गुमसुम है। सारे मंत्री और कांग्रेसी विधायक दो खेमों में बंटकर अलग-अलग बाड़ेबन्दी के तहत होटलों में बंद हैं। कांग्रेस को जब जब आंतरिक असंतोष से भय लगा, उसने राजस्थान में बाड़ेबंदी के विशेषज्ञों का उपयोग किया। गुजरात में राज्यसभा के चुनाव हों, चाहे मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक सरकार के गठन के मामले हों; कांग्रेस पार्टी ने अपने विधायकों को बाड़ाबन्दी के लिए राजस्थान भेजा। अब जब खुद अपनी ही सरकार पर बन आई तो इन नेताओं ने अपने-अपने विधायकों को हांक अपने बाड़े में बंद कर दिया। लोकतंत्र में संभवतया जनता के साथ इससे भोंडा मजाक नहीं हो सकता।

कांग्रेस पार्टी अपने आंतरिक कलह को सुलझाने में विफल रहने पर येन-केन-प्रकारेण सरकार को बचाने की जुगत में लगी है। रातों-रात एसओजी का गठन कर सरकार अपनी ही पार्टी के उप मुख्यमंत्री तथा उनके समर्थक विधायकों की खबर लेने की कोशिश कर रही है। उन विधायकों के खिलाफ दूसरा मोर्चा संभाला है विधानसभा के अध्यक्ष महोदय ने। उन्होंने होटल में हुई विधायक दल की बैठकों में भाग न लेने वाले विधायकों को व्हिप के उल्लंघन का दोषी मान नोटिस जारी कर दिया। पार्टी का केन्द्रीय नेतृत्व जो केवल एक परिवार तक ही सीमित हैं, द्वारा प्रदेश के अन्तर्कलह को नहीं सुलझा पाना उसकी अक्षमता तथा कमजोरियों को ही उजागर करता है।

इन घटनाओं से कई संवैधानिक प्रश्न खड़े हो गये हैं। जैसे क्या नेतृत्व परिवर्तन की मांग करने वाले विधायक पार्टी में नहीं रह सकते जबकि उन्होंने पार्टी के विरुद्ध न कुछ बोला, न ही किया। क्या सामान्य नागरिकों को मिला अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मूल अधिकार विधायक बनते ही पार्टी के पास गिरवी हो जाता है।

राजस्थान में सरकार बनने के दिन से ही मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री के बीच टकराहट चल रही है। उपमुख्यमंत्री का मानना है कि पिछले ५ साल में उन्होंने कांग्रेस पार्टी को मजबूत बना सत्ता तक लाने में दिन-रात एक किया। किन्तु जब सरकार गठन का समय आया तो कोई और आगे आ मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिराजमान हो गये।

मुख्यमंत्री विरोधी गुट के विधायकों को न्यायालय से तात्कालिक राहत मिलने से मुख्यमंत्री जी को अपने विधायकों के भाग छूटने का भय सताने लगा और वे २४ जुलाई को प्रदेश के संवैधानिक प्रमुख राज्यपाल से मिलने गये तथा उन्हें २३ जुलाई की मंत्रिपरिषद की सिफारिश के आधार पर विधान सभा का सत्र तुरन्त आहूत करने को कहा। अन्तनिर्हित भाव यह भी होगा कि सत्र में विधानसभा →

असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः सन्तुष्टाश्च महीभृतः ।
सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कुलाङ्गनाः ।।

संतोषरहित विद्वान संतुष्ट होने वाला राजा, लज्जायुक्त वेश्या और लज्जाहीन कुलीन स्त्रियाँ नष्ट हो जाती है।

(हितो/विग्रह/६४)

आगामी पक्ष (१६ –३१ अगस्त २०२०) के विशेष अवसर

(भाद्रपद कृष्ण १२ से भाद्रपद शुक्ल १३)

जन्म दिवस

१८ अगस्त (१७००) – अपराजेय नायक पेशवा बाजीराव का जन्म दिवस

२० अगस्त (१८५४)– नारायण गुरु की जयन्ती

भाद्रपद शुक्ल २ (इस बार २० अगस्त) – बाबा रामदेव जयन्ती

भाद्रपद शुक्ल ३ (इस बार २१ अगस्त) – वराह जयन्ती

भाद्रपद शुक्ल ४ (इस बार २२ अगस्त) – गणेश चतुर्थी

भाद्रपद शुक्ल ६ (इस बार २४ अगस्त) – बलराम जयन्ती

भाद्रपद शुक्ल ८ (इस बार २६ अगस्त) – महर्षि दधीचि जयन्ती

२८ अगस्त (१९०३)– प्रथम प्रचारक बाबा साहब आप्टे की जयन्ती

२९ अगस्त (१९०५)– मेजर ध्यानचंद का जन्म दिवस

भाद्रपद शुक्ल १२ (इस बार ३० अगस्त) – वामन जयन्ती

अन्य

१७ अगस्त (१६६६)– शिवाजी महाराज की आगरा से मुक्ति

१८ अग.(१९०७)– भीखाजी कामा द्वारा स्टुगार्ट (जर्मनी) में प्रथम राष्ट्रध्वज फहराया गया

भाद्रपद शुक्ल १ (इस बार २० अगस्त)– गुरूग्रन्थ साहब प्रकाशोत्सव

२५ अग. (१३०३)– महारानी पद्मिनी के साथ १६००० क्षत्राणियों द्वारा चित्तौड़ में प्रथम जौहर

२५ अगस्त (१३०३)– चित्तौड़ का पहला साका

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

१७ अगस्त (१८४८)– वजीर रामसिंह पठानिया की अंग्रेजों से युद्ध में शहादत

१७ अगस्त (२००७)– आधुनिक भगीरथ दशरथ मांझी की पुण्य तिथि

१७ अगस्त (१९०९)– मदनलाल धींगड़ा की शहादत (लंदन में फांसी)

२० अगस्त (२००४)– इतिहासकार गंगाराम सम्राट की पुण्यतिथि

२० अगस्त (१९९२)– दक्षिण मे संघ कार्य का विस्तार करने वाले यादव राव जोशी का निधन।

२२ अग. (१९८२)– विवेकानंद स्मारक के शिल्पी एकनाथ रानाडे की पुण्यतिथि

२३ अगस्त (१५७३)– पुर्तगालियों से लड़ते हुए रानी अबक्का की शहादत

भाद्रपद शुक्ल ११ (इस बार २९ अगस्त) – बाबा रामदेव समाधिस्थ

२९ अगस्त (१९३१)– मणिपुर के क्रांतिकारी २६ वर्षीय जदोनांग को फांसी

→ अध्यक्ष से इन विधायकों को अयोग्य घोषित करवा सकें। राज्यपाल के मत में अभी कोरोना संक्रमण विस्तार पर है, विधायकों को नोटिस का मामला उच्च तथा उच्चतम न्यायालय के विचारधीन है और जब मुख्यमंत्री के पास आवश्यक बहुमत है तो विश्वासमत हासिल करने की क्या आवश्यकता है। राज्यपाल द्वारा तत्काल सत्र आहूत करने पर सहमति न देने पर मुख्यमंत्री चेतावनी देने से नहीं चूके कि राजभवन का घेराव हुआ तो हमारी जिम्मेदारी नहीं है। मतलब राज्य की अराजकता की जिम्मेवारी सरकार की नहीं।

जनतंत्र में चुनी हुई सरकार का पहला दायित्व लोक–कल्याण का होता है। कोरोना संक्रमण में प्रदेश प्रतिदिन नए कीर्तिमान बना रहा है। इस महामारी तथा लॉकडाउन ने आम आदमी के लिए रोजी रोटी का संकट खड़ा कर दिया है। बेरोजगारी दशकों के उच्चतम स्तर पर है। सरकारी अस्पताल तथा निःशुल्क दवा योजना अव्यवस्थाओं में दम तोड़ रही है। बरसात न होने तथा टिड्डी हमलों से किसान परेशान तथा लगभग बर्बाद है। महिला उत्पीड़न तथा बलात्कार उच्चतम स्तर पर है। कुल मिलाकर प्रदेश में सरकार नदारद और जनता त्रस्त है। मंत्री परिषद की अनुपस्थिति से पूरा शासन प्रशासन किंकर्तव्यविमूढ़ तथा अनिर्णय की स्थिति में है तथा नौकरशाही निर्भय हो, भ्रष्टाचार में लिप्त हैं।

यदि नेताओं के बयानों में सत्यता है अर्थात विधायक ३०–३५ करोड़ रुपए में बिकते और खरीदे जाते हैं तो जनता समझ सकती है कि ये चुने हुए प्रतिनिधि सत्ता में बने रहने पर कितना कमाते होंगे। स्पष्ट है राजनीति सेवा नहीं मोटे मुनाफे का धंधा बन गई है, जो जनता के लिए विचारणीय प्रश्न तथा प्रजातन्त्र के लिए खतरे की घंटी है।

सत्ता सभी राजनीतिक दलों का लक्ष्य होता है। किन्तु सत्ता प्राप्त करने तथा उसे बनाए रखने के लिए अपने ही विधायकों के खिलाफ कट्टर दुश्मन की तरह व्यवहार करना, अपने मनमाने निर्णयों से सहमत नहीं होने पर राज्यपाल को धमकाना तथा अपनी ही जनता के सुख–दुख की अनदेखी कर किसी भी प्रकार सत्ता में बने रहने वाला यह कांग्रेसी खेल राजस्थान की जनता खुली आँखों से देख रही है और समय आने पर इसका उचित हिसाब अवश्य लेगी ■

विजयनगर साम्राज्य के अजेय राजा कृष्णदेव राय

राजा कृष्णदेव राय विजयनगर के सबसे कीर्तिवान राजा थे, जिन्होंने १५०९ ई. से १५२९ ई. तक शासन किया। अद्भुत शौर्य और पराक्रम के प्रतीक राजा कृष्णदेव राय का मूल्यांकन करते हुए इतिहासकारों ने लिखा है कि इनके अंदर हिन्दू जीवन आदर्शों के साथ ही सभी भारतीय सम्राटों के सद्गुणों का समन्वय था। इनके शासन में विक्रमादित्य जैसी न्याय व्यवस्था थी, चंद्रगुप्त मौर्य और सम्राट अशोक जैसी सुदृढ़ शासन व्यवस्था तथा शृंगेरी मठ के शंकराचार्य महान संत विद्यारण्य स्वामी की आकांक्षाओं एवं आचार्य चाणक्य के नीति तत्वों का समावेश था।

परिचय – महान राजा कृष्णदेव राय का जन्म १६ फरवरी १४७१ को वर्तमान कर्नाटक के हम्पी (हस्तिनावती) में हुआ था। उनके पिता का नाम तुलुवा नरसा नायक और माता का नाम नागला देवी था। उनके बड़े भाई का नाम वीर नरसिंह था। नरसा नायक विजयनगर साम्राज्य के शासक सालुव वंश के सेनानायक थे तथा शासक उमाडि नरसिंह के संरक्षक भी थे। जब साम्राज्य में इधर-उधर विद्रोही सिर उठा रहे थे, तुलुवा नरसा नायक ने १४९१ में शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। १५०३ में नरसा नायक की मृत्यु के बाद कृष्णदेव राय के बड़े भाई वीर नरसिंह ने राज सिंहासन सम्हाला। नरसिंह का पूरा शासनकाल आंतरिक विद्रोह तथा आक्रमणों से प्रभावित रहा। ४० वर्ष की उम्र में ही बीमारी के कारण उनकी मृत्यु हो गई। वीर नरसिंह के देहान्त के बाद **८ अगस्त १५०९ (माघ शुक्ल १४ वि. संवत् १५६६) को कृष्णदेव राय का विजयनगर साम्राज्य के सिंहासन पर राजतिलक हुआ।**

राज्य विस्तार – राजा कृष्णदेव राय कूटनीति में माहिर थे। उन्होंने अपनी बुद्धिमानी से आन्तरिक विद्रोहों को शांत कर बहमनी सुल्तानों के राज्यों पर अधिकार हासिल किया। उन्होंने राजकाज संभालने के बाद अपने साम्राज्य का विस्तार अरब सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तक कर लिया था, जिसमें आज के कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश, केरल, गोवा और उड़ीसा प्रदेश आते हैं। राज्य की सीमाएं पूर्व में विशाखापट्टनम, पश्चिम में कोंकण और दक्षिण में भारतीय प्रायद्वीप के अंतिम छोर तक थी। हिन्द महासागर में स्थित कुछ द्वीप भी उनके आधिपत्य में थे।

अजेय योद्धा – बाजीराव बल्लाल भट्ट की तरह ही राजा कृष्णदेव राय एक अजेय योद्धा एवं उत्कृष्ट युद्ध विशारद थे। उनके शासन से पहले दक्षिण भारत के राज्य आपस में लड़ते रहते थे। इनमें चार राजघराने वारंगल के ककातिया, मध्य दक्षिण पठारी क्षेत्र के होयसल, देवगिरि के यादव और धुर दक्षिण के पंड्या। अपने २१ वर्ष के शासन (१५०९ से १५३०) में उन्होंने १४ युद्धों का सामना किया और सभी में विजय प्राप्त की । उनका सबसे उल्लेखनीय युद्ध था, बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुंडा के सुल्तानों की संयुक्त सेना के साथ।

दक्षिण की विजय में राजा कृष्णदेव राय ने शिव-समुद्रम के युद्ध में कावेरी नदी के प्रवाह को परिवर्तित करके अपूर्व रणकौशल का परिचय दिया और उस अजेय जल दुर्ग को जीत लिया। उस समय गजपति प्रताप रुद्र का राज्य विजयवाड़ा से बंगाल तक फैला था। गजपति के उदयगिरि किले की घाटी अत्यन्त संकरी थी, अत: एक अन्य पहाड़ी पर मार्ग बनाया गया और दुश्मन सेना को चकमा देकर उनकी सेना ने किला जीत लिया। इसी तरह कोण्डविड के किले में गजपति की विशाल सेना थी और नीचे से किले के ऊपर चढ़ना असंभव था। राजा कृष्णदेव राय ने वहां पहुंचकर मचान बनवाए, ताकि किले के समान ही धरातल से बाण वर्षा हो सके। यहां से गजपति की रानी तथा राज परिवार के कई सदस्य बंदी बना लिए गए। उनकी कूटनीति से गजपति को भ्रम हो गया कि उसके महापात्र १६ सेनापति कृष्णदेव राय से मिले हुए हैं। अत: उन्होंने कृष्णदेव राय से संधि कर ली और अपनी पुत्री जगन्मोहिनी का विवाह उनसे कर दिया। इस तरह मदुरै से कटक तक के सभी किले हिन्दू साम्राज्य में आ गए। पश्चिमी तट पर भी कालीकट से गुजरात तक के राजागण सम्राट कृष्णदेव राय को कर देते थे।

बहमनी सुल्तानों के प्रति रणनीति – उस काल में बहमनी सुल्तानों के पास प्रचण्ड शक्ति थी। अत: राजा कृष्णदेव राय ने उनके विरुद्ध धैर्य और कूटनीति का प्रयोग किया। गोलकुण्डा का कुली कुतुबशाह, बीजापुर का आदिलशाह इत्यादि शक्तिशाली होने के साथ ही क्रूर ओर निर्मम सुल्तान थे। वे जहां भी विजयी होते, वहां हिन्दुओं का कत्लेआम, मंदिरों को ध्वस्त करना और लूटना उनके लिए सामान्य बात थी।

रायचूर की विजय – सबसे कठिन और भारतवर्ष का सबसे विशाल युद्ध रायचूर के किले के लिये हुआ। घटनाक्रम के अनुसर राजा कृष्णदेव राय ने एक मुस्लिम दरबारी सीडे मरीकर को ५०००० सिक्के देकर घोड़े खरीदने के लिये गोवा भेजा था, पर वह आदिलशाह के यहाँ भाग गया। सुल्तान आदिलशाह ने उसे वापस भेजना अस्वीकार कर दिया। तब राजा ने बीजापुर के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। कूटनीतिक तरीके से बरार, बीदर, गोलकुंडा के सुल्तानों को उन्होंने आदिलशाह की सहायता नहीं करने की चेतावनी दी।

१९ मई १५२० को युद्ध प्रारंभ हुआ और आदिलशाह की करारी पराजय हुई। सुल्तान वहां से भाग गया और रायचूर किले पर विजयनगर साम्राज्य का अधिकार हो गया। आसपास के अन्य सुल्तानों तथा पुर्तगालियों में कृष्णदेव राय की इस विजय से भय व्याप्त हो गया। जब आदिलशाह का दूत क्षमायाचना के लिए आया तो राजा का उत्तर था कि स्वयं आदिलशाह आकर उनके पैर चूमे।

दीवानी का युद्ध – हालांकि सभी बहमनी सुल्तान विजयनगर से पराजित होते रहे थे, किन्तु उनकी धार्मिक कट्टरता ने राजा कृष्णदेव राय की उदारता को भुला दिया और एक समय ऐसा भी आया जब बीदर, बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुण्डा आदि दक्षिण के लगभग सभी सुल्तानों ने मिलकर कृष्णदेव राय के विरुद्ध जिहाद छेड़ दिया। यह युद्ध ''दीवानी'' नामक स्थान पर हुआ। मलिक अहमद बाहरी, नूरी खान ख्वाजा-ए-जहां, आदिलशाह, कुतुब-उल-मुल्क, तमादुल-मुल्क, दस्तूरी ममालिक, मिर्जा लुत्फुल्लाह इन सभी ने मिलकर विजयनगर पर हमला बोल दिया। इसमें बीदर के घायल सुल्तान महमूद शाह द्वितीय को सेनापति रामराज तिम्मा ने बचाकर मिर्जा लुत्फुल्लाह के खेमे में पहुंचाया लेकिन युसुफ आदिल खाँ को मार डाला। दो सुल्तानों के प्रति पक्षपात मानकर भ्रम हो गया और सुल्तानों में आपसी अविश्वास के कारण जिहाद असफल हो गया। इस लड़ाई के परिणामस्वरूप बहमनी सुल्तानों को भारी क्षति उठानी पड़ी। पुर्तगाली भयभीत होकर समझ गये कि हिंदू राजा की सहायता (अनुकम्पा) के बिना उनका व्यापार संभव नहीं है और उन्होंने राजा से मित्रता की। भारतीयों में आत्म गौरव और स्वाभिमान का प्रबल जनज्वार खड़ा हो गया। सम्राट कृष्णदेव राय ने इस सफलता पर विजयनगर में शानदार उत्सव का आयोजन किया।

इन मुस्लिम सुल्तानों को समूल नष्ट नहीं करना बाद में मंहगा पड़ा और सभी मुस्लिम रियासतों ने संगठित हो दिसम्बर १५६४ में विजयनगर पर हमला बोला। यह युद्ध तालिकोट में हुआ। इस युद्ध में विजयनगर सेना की मुस्लिम टुकड़ियों की गद्दारी के कारण सुल्तानों की संयुक्त सेना ने न केवल जीता बल्कि विजयनगर में लूटमार, हत्याओं, ध्वंस का वो तांडव हुआ, जिसकी तुलना नादिरशाह की दिल्ली लूट और कत्लेआम से की जा सकती हैं। बीजापुर, बीदर, गोलकोण्डा तथा अहमदनगर की सेना लगभग ५-६ महीने उस नगर में रही। इस अवधि में उसने इस वैभवशाली नगर की ईंट से ईंट बजा दी। ग्रंथागार व शिक्षा केन्द्रों को आग की भेंट चढ़ा दिया गया। मंदिरों और मूर्तियों पर लगातार हथौड़े बरसते रहे। हमलावरों का एकमात्र लक्ष्य था हिन्दू साम्राज्य विजयनगर का ध्वंस और लूट।

राजा कृष्णदेव का सैन्यबल – विभिन्न युद्धों मे लगातार विजय के कारण अपने जीवनकाल में ही राजा कृष्णदेव राय लोककथाओं के नायक हो गये थे। उनके पराक्रम की कहानियां प्रचलित हो गई थीं। ६५१ हाथियों की सेना से सुसज्जित मुख्य सेना में १० लाख सैनिक तथा २२००० घुड़सवार थे। राजा कृष्णदेव राय के नेतृत्व में ६००० घुड़सवार, ४००० पैदल और ३०० हाथी अलग से थे।

यात्री विवरण – कई विदेशी यात्रियों ने तत्कालीन विजयनगर साम्राज्य की परिस्थितियों का वर्णन किया है। कृष्णदेव के दरबार में कई वर्षों तक रहने वाले पुर्तगाल के यात्री डोमिंगो पाएस, ने लिखा है कि राजा महान तथा न्यायप्रिय शासक है, वह अपनी प्रजा को बहुत प्यार करता है और प्रजा कल्याण की उसकी भावना ने किंदवन्तियों का रूप धारण कर लिया। पुर्तगाली यात्री बारबोसा ने राजा की खूब प्रशंसा की। उसने समकालीन सामाजिक और आर्थिक जीवन का वर्णन करते हुए लिखा कि राजा कृष्णदेव ने बंजर एवं जंगली भूमि को कृषि योग्य बनाने का प्रयत्न किया तथा ''विवाह-कर'' जैसे अलोकप्रिय कर को समाप्त किया।

विद्वान और संरक्षक – कृष्णदेव राय तेलगु साहित्य के महान विद्वान थे। उन्हें तेलगु व संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने संस्कृत भाषा में जाम्बवती कल्याण, परिणय, सकलकथासार-संग्रहम, मदारसाचरित्र, सत्यवधु-परिणय की रचना की। इसके अलावा उन्होंने तेलगु के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अमुक्त माल्यद' या 'विस्वुवितीय' की रचना की, जो तेलगु के पांच महाकाव्यों में से एक है। कृष्णदेव राय ने इस ग्रंथ में राजस्व के विनियोजन एवं अर्थव्यवस्था के विकास पर विशेष बल देते हुए लिखा है, ''राजा को तालाबों व सिंचाई के अन्य साधनों तथा अन्य कल्याणकारी कार्यों के द्वारा प्रजा को संतुष्ट रखना चाहिए।'' उनके शासनकाल में तेलगु साहित्य का नया युग प्रारंभ हुआ, जब संस्कृत से अनुवाद की अपेक्षा तेलगु में मौलिक साहित्य लिखा जाने लगा। इससे तेलगु के साथ-साथ कन्नड़ और तमिल साहित्य को भी प्रोत्साहन मिला। कृष्णदेव राय महान प्रशासक होने के साथ-साथ एक महान विद्वान, विद्या प्रेमी और विद्वानों के उदार संरक्षक भी थे। यही कारण है कि वे 'अभिनव भोज' या 'आंध्र भोज' के रूप में प्रसिद्ध हुए।

भवन निर्माता – कृष्णदेव राय महान भवन निर्माता भी थे। उन्होंने विजयनगर के पास अपनी माता के नाम पर 'नागलापुर' नामक एक नया शहर बनवाया और बहुत बड़ा तालाब खुदवाया जो सिंचाई के काम भी आता था। उन्होंने विजयनगर में भव्य राम मंदिर, हजारा राम मंदिर (हजार खम्भों वाला) एवं विट्ठल स्वामी नामक मंदिर बनवाए जो उस समय की उत्कृष्ट स्थापत्य कला के नमूने हैं।

सहिष्णुता – राजा कृष्णदेव राय की सबसे बड़ी उपलब्धि थी, उनके शासनकाल के समय साम्राज्य में सहिष्णुता की भावना का पनपना। पुर्तगाली यात्री बारबोसा कहता है कि राजा इतनी

स्वतंत्रता देता है कि कोई भी व्यक्ति, अपनी इच्छा से आ जा सकता है, बिना कठिनाई या पूछताछ के कि वह ईसाई है या यहूदी या मूर है अथवा नास्तिक है। वह अपने धार्मिक आचार के अनुसार रह सकता है। यात्री ने राज्य में प्राप्त न्याय और समानता के लिये भी राजा की प्रशंसा की है।

अष्ट दिग्गज कवि – अवंतिका के महान राजा विक्रमादित्य ने नवरत्न रखने की परंपरा की शुरुआत की थी। इसी कड़ी में राजा कृष्णदेव राय के दरबार में तेलगु साहित्य के ८ सर्वश्रेष्ठ कवि रहते थे जिन्हें ''अष्टदिग्गज'' कहा जाता था। अष्टदिग्गज में भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण ''अल्लसानि पेद्दन'' को तेलगु कविता के पितामह की उपाधि प्रदान की गई थी। कुमार व्यास का ''कन्नड़ भारत'' कृष्णदेव राय को समर्पित है। ये अष्टदिग्गज मंत्री परिषद में शामिल थे और प्रजा कल्याण के कार्यों पर नजर रखते थे। राजा तक प्रजा की सीधी पहुंच थी। राजा कृष्णदेव राय के दरबार के सबसे प्रमुख सलाहकार थे रामलिंगम। तेनाली गांव का होने के कारण उन्हें तेनालीराम कहा जाता था। तेनालीराम की बुद्धिमता के कारण विजयनगर साम्राज्य आक्रमणकारियों से सुरक्षित तो रहता ही था, साथ ही राज्य में इसके कारण कला और संस्कृति को भी बढ़ावा मिला।

लोकनायक – एक अजेय सेनानायक, कुशल संगठक और प्रजारंजक प्रशासक होने के साथ-साथ कृष्णदेव राय परमभक्त और कवि भी थे। विभिन्न विषयों के देशी-विदेशी विशेषज्ञ राजा के आश्रय में साम्राज्य की उन्नति में सहायक थे। राजा जहां-जहां गये, वहां आक्रांताओं द्वारा तोड़े गये या खंडहर बन चुके प्राचीन मंदिरों का जीर्णाद्धार करवाया, उनमें राजगोपुरम का निर्माण कराया तथा नए मंदिर बनवाए। फलस्वरूप विजयनगर स्थापत्य शैली का प्रवर्तन हुआ। रामेश्वरम् से राजमहेन्द्रपुरम, अनन्तपुर तक इसके उदाहरण दिखाई देते हैं। मंदिरों के कारण विद्यालयों का जाल भी विजयनगर साम्राज्य में बिछ गया था। व्यापक कराधान द्वारा धन संग्रह के साथ सामाजिक अभिलेख भी संग्रह हो गये थे। इस धन का मुख्य उपयोग सेना और सिंचाई के लिए होता था। उन्होंने तुंगभद्रा पर बड़ा बांध बनवाया तथा उससे नहरें निकाली। इस साम्राज्य में हजारों छोटी बड़ी सिंचाई की योजनाएं और जल स्त्रोतों पर बांध बनाए गये, नए नगर बसाए गये। आन्तरिक शांति के कारण प्रजा में साहित्य, संगीत और कला को प्रोत्साहन मिला।

मृत्यु – सम्राट ने अपने इकलौते पुत्र तिरुमल राय को राजगद्दी देकर प्रशिक्षित करना प्रारंभ कर दिया था, लेकिन पुत्र की एक षड्यंत्र में हत्या हो गई। इसी विषाद में राजा कृष्णदेव राय की १५२९ ई में मृत्यु हो गई। बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' में कृष्णदेव राय को भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया है।

अजेय सम्राट कृष्णदेव राय का शासनकाल भारत का स्वर्णिम युग था, जब विजयनगर साम्राज्य का विस्तार हुआ। धर्म, कला, साहित्य का विकास एवं संरक्षण हुआ। उनके शासन काल की सबसे बड़ी विशेषता है कि उन्होंने भारत में बर्बर मुगल सुल्तानों की योजना को धूल चटाकर एक आदर्श हिन्दू साम्राज्य की स्थापना की, जो आगे चलकर छत्रपति शिवाजी महाराज के हिंदवी स्वराज्य का प्रेरणा स्त्रोत बना। ■

जन्म शताब्दी वर्ष (१९२०-२०२०) पर विशेष

उनकी आत्मीयता

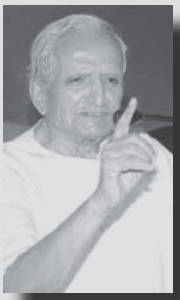

श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत दिये जा रहे प्रसंगों की शृंखला में इस बार प्रस्तुत है प्रभाकर घाटे, पूर्व महामंत्री, भारतीय मजदूर संघ, मंगलौर (कर्नाटक)का अनुभव कथन –

आपात्काल के दिन थे। आवागमन प्रतिबंधित था और वाणी अवरूद्ध। उस समय की आवश्यकता थी प्रबल जनजागरण ताकि (प्रेस) बोलने की स्वतंत्रता को, आवागमन की स्वतंत्रता को, विचार प्रगट करने की स्वतंत्रता को और यहां तक कि संसद की स्वतंत्रता को बहाल किया जा सके। एक के बाद एक दो नेताओं को उनके छद्म वेश के बावजूद पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। तीसरा व्यक्ति भारत के बाहर भिन्न देशों में कार्यरत था। यह रहस्य था कि केवल एक व्यक्ति जन जागरण के महान् उद्देश्य को लेकर सब तरफ घूम रहा था।

उसी बीच मेरी माता जी का निधन हो गया। बहुत सारे लोग संवेदना प्रगट करने व सांत्वना देने के लिए आ जा रहे थे। पुलिस और खुफिया पुलिस के लोग भी आए।

पेन्ट-बुशर्ट पहने और आंखों पर चश्मा लगाए सेना के एक उच्च अधिकारी जैसा दिखने वाला व्यक्ति भी संवेदना प्रकट करने के लिए वहां उपस्थित हुआ। मेरे बड़े बेटे व मेरी पत्नी ने मुझे बताया कि कोई बड़े अफसर संवेदना प्रगट करने आए हैं। मैंने उनका स्वागत किया पर यह देखकर सकपका गया कि पुलिस का सर्वाधिक वांछित (Most wanted) व्यक्ति मेरे द्वार पर था। खुफिया विभाग के लोग केवल उन्हीं की खोज में प्रात: काल से मेरे घर पर आ रहे थे।

मैंने उस अफसर की अगवानी की, उनका आशीर्वाद प्राप्त किया ताकि दु:ख की घड़ी में मुझे कुछ ढ़ाढ़स बंधे। मैंने उनसे तुरन्त सुरक्षित निकल जाने की भी प्रार्थना की। **वे थे हमारे श्रद्धेय ठेंगड़ी जी एक छदम् वेश में।** ■

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित मनोज चौहान

रानी अहिल्या बाई की कर्मभूमि इन्दौर चन्द्रभागा नदी के किनारे बसा है। यद्यपि बढ़ते शहरीकरण और प्रदूषण के कारण अब वह नदी सिकुड़ कर एक नाले जैसी रह गयी है। नदी के तट पर धनपतियों की विशाल अट्टालिकाओं के साथ-साथ निर्धन और मध्यमवर्गीय परिवारों की बस्तियाँ भी हैं। वह ०१ अगस्त, २००५ की काली रात थी, जब इन्दौर और उसके आसपास का क्षेत्र भीषण वर्षा की चपेट में था। उस समय सब लोग गहरी नींद में थे।

कच्चे-पक्के मकानों की ऐसी ही एक बस्ती का नाम है मारुति नगर। वह अपेक्षाकृत कुछ नीचे की ओर बसी है। वर्षा के कारण जब नगर की नालियाँ उफनने लगीं, तो सारा पानी इस मारुति नगर की ओर ही आ गया। सब लोग जागकर अपने सामान, बच्चों और पशुओं की सुरक्षा में लग गये।

पर उस बस्ती में मनोज चौहान नामक एक १७ वर्षीय नवयुवक भी था। वह वहाँ लगने वाली शाखा का मुख्य शिक्षक था। उसके घर की आर्थिक स्थिति सामान्य थी। पिता उमराव चौहान की नौकरी लकवा मार जाने के कारण छूट गई थी। अतः वे मोहल्ले में ही छोटी सी किराने की दुकान चलाते थे। मनोज की माँ भी कुछ परिवारों में घरेलू काम कर कुछ धन जुटा लेती थीं। इस प्रकार गृहस्थी की गाड़ी किसी तरह खिंच रही थी।

मनोज अत्यधिक उत्साही एवं सेवाभावी नवयुवक था। शाखा के संस्कार उसके आचरण में प्रकट होते थे। बस्ती में किसी पर कोई भी संकट हो, वह सबसे आगे आकर वहाँ सहायता में जुट जाता था। उसके हृदय के दोनों वाल्व खराब होने के कारण चिकित्सकों ने उसे अत्यधिक परिश्रम से मना किया था; पर मनोज निश्चिंत भाव से शाखावेश पहनकर बस्ती वालों की सेवा में लगा रहता था। दूसरों की सेवा में ही उसे आनंद आता था।

बस्ती में पानी भरने से जब हाहाकार मचा; तो मनोज के लिए शान्त रहना असम्भव था। उसने अपने परिवार को ऊँचे स्थान पर जाने को कहा और स्वयं पानी में फँसे लोगों को निकालने लगा। वह रबड़ के ट्यूब, खाली खोखे तथा लकड़ी आदि पानी में तैरने वाली वस्तुएं एकत्र कर लोगों को देने लगा। उसने ८-१० बच्चों सहित ३० लोगों की प्राणरक्षा की और अनेक परिवारों का सामान भी निकाला। मनोज के साथ उसकी शाखा के सब स्वयंसेवक भी जुट गये। पूरी बस्ती मनोज का साहस देखकर दंग थी। इस प्रकार पूरी रात बीत गयी। मनोज की माँ ने कई बार उसे पुकारा, उसे याद भी दिलाया कि उसे अत्यधिक परिश्रम की मनाही है; पर मनोज की प्राथमिकता आज केवल बस्ती की रक्षा ही थी।

जब तक संभव हुआ, वह गहरे पानी में जा-जाकर लोगों को बचाता रहा। सारी रात के इस परिश्रम से मनोज के फेफड़ों में वर्षा का गन्दा पानी भर गया। अगले दिन लोगों ने बेहोशी की हालत में उसे चिकित्सालय में भर्ती कराया। जाँच से पता लगा कि उसे भीषण निमोनिया हो चुका था। चिकित्सकों ने काफी प्रयास किया। मनोज के परिजनों, मित्रों, शाखा के स्वयंसेवकों तथा बस्तीवालों की शुभकामनाएं भी उसके साथ थी। फिर भी उसे बचाया नहीं जा सका। ५ अगस्त २००५ को उसने प्राण त्याग दिये। मृत्यु के बाद उसकी शाखा वाली निकर की जेब से बस्ती के निर्धन परिवारों की सूची मिली, जिन्हें कम्बल, बर्तन, दवा आदि की आवश्यकता थी।

उसके इस सेवाकार्य की चर्चा पूरे प्रदेश में फैल गयी। **२६ जनवरी, २००६ को गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने मनोज चौहान के कार्य को स्मरण करते हुए उसे मरणोपरान्त 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' से सम्मानित किया।** ■

जन्म दिवस पर शत-शत नमन

स्वतंत्रता सेनानी तथा हिन्दी के अनन्य समर्थक
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन
१ अगस्त

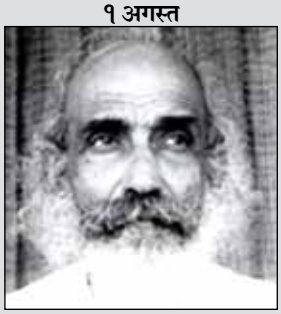

(१८८२-१९६२)

आधुनिक भारत के महान रसायन शास्त्री
डा. प्रफुल्लचंद्र राय
२ अगस्त

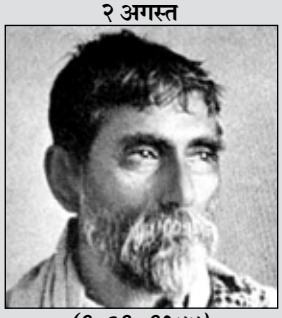

(१८६१-१९४४)

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के पितामह
डॉ. विक्रम साराभाई
१२ अगस्त

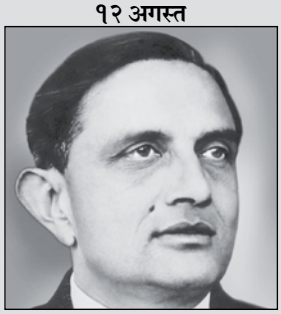

(१९१९-१९७१)

महान क्रान्तिकारी, दार्शनिक, चिन्तक एवं योगी
महर्षि अरविन्द घोष
१५ अगस्त

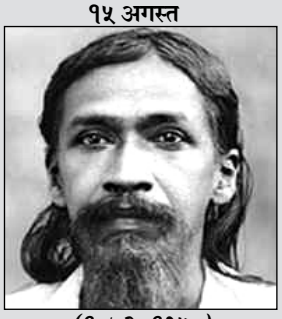

(१८७२-१९५०)

सनातन धर्म ही है राष्ट्रीयता : महर्षि अरविंद

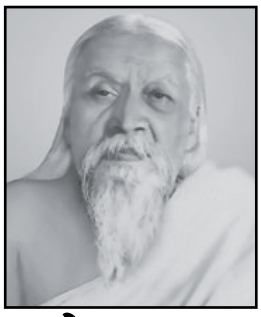

अलीपुर जेल में एक वर्ष कैद रहने के समय महर्षि अरविंद को श्रीमद्भगवद् गीता की शिक्षाओं द्वारा आत्म-साक्षात्कार की अनुभूति हुई। उन्होंने इस अनुभूति को हिन्दू धर्म के सत्य से साक्षात्कार की संज्ञा दी। आत्म-साक्षात्कार के बाद उन्हें सब कुछ कृष्णमय लगने लगा। यहां तक कि जेलर, अन्य कैदी, मुकदमे के दौरान न्यायाधीश, उनके ही नहीं सरकारी वकील भी श्री कृष्ण ही लगने लगे थे। जेल से रिहाई के बाद उनका पहला सार्वजनिक भाषण ३० मई १९०९ को बंगाल के उत्तरपाड़ा में धर्म रक्षिणी सभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हुआ, जिसका विषय था- 'हिन्दू धर्म'। अंग्रेजी में दिए इस भाषण का हिंदी में सार संक्षेप पाठकों के लिए प्रस्तुत है-

मेरा लालन-पालन इंग्लैण्ड में विदेशी भावों तथा विदेशी वातावरण में हुआ है। एक समय मैं हिन्दू धर्म की बहुत सी बातों को मात्र कल्पना समझता था। परन्तु अब दिन-प्रतिदिन मैंने हिन्दू धर्म के सत्य को अपने मन, प्राण तथा शरीर में अनुभव किया है। सार्वजनिक जीवन में प्रवेश से कुछ समय पहले बड़ौदा में मैं आध्यात्मिकता की ओर थोड़ा बढ़ा किन्तु तब तक भी मैं नास्तिक, संदेहवादी था, जिसे भगवान के अस्तित्व पर विश्वास नहीं था। फिर भी मेरे अन्तर्मत मन में कुछ था, जो मुझे वेद, गीता तथा हिन्दू धर्म के सत्य को जानने को प्रेरित कर रहा था। मुझे लगा वेदांत आधारित इस धर्म में कोई परम शक्तिशाली सत्य अवश्य है। इसलिए जब मैं योग मार्ग पर आगे बढ़ा, तब मैंने ईश्वर से प्रार्थना की और कहा, *''हे भगवान, मैं मोक्ष नहीं मांगता, मुझे दूसरे लोगों की तरह सांसारिक वस्तुओं की चाह नहीं है, मैं केवल इस राष्ट्र के उत्थान के लिये शक्ति मांगता हूं ताकि मैं अपने देशवासियों, जिन्हे मैं प्रेम करता हूँ, के लिए अपना जीवन समर्पित करके काम कर सकूं।''*

योग युक्त अवस्था में मुझे दो संदेश मिले- पहला, इस राष्ट्र को ऊपर उठने में सहायता करने के काम को भगवान का काम मानकर करना। दूसरा सदेश है, हिन्दू धर्म के सत्य का परिचय संसार को कराना जिसे भगवान ने ऋषियों, मुनियों तथा अवतारों के माध्यम से विकसित कर पूर्ण बनाया। सनातन धर्म जिसके बारे में पहले मुझे संशय थे, किन्तु एक वर्ष के एकान्तवास में भगवान ने मुझे इसकी अनुभूति करा दी है और आज्ञा दी है कि जेल से छूटने के बाद राष्ट्र को बताऊं कि इस राष्ट्र का अस्तित्व सनातन धर्म के लिए है। यह सनातन धर्म विश्व समुदाय के लिये भी है। इसलिए जब यह कहा जाता है कि भारत जागेगा इसका अर्थ है सनातन धर्म महान होगा। भारत आगे बढ़ेगा और फैलेगा तो इसका अर्थ है सनातन धर्म बढ़ेगा और विश्व में छा जायेगा। भारत का अस्तित्व धर्म के लिये तथा धर्म के द्वारा ही है। धर्म की महिमा बढ़ाने का अर्थ है, राष्ट्र की महिमा बढ़ाना। भगवान ने मुझे सप्रमाण दिखाया है कि वे सभी व्यक्तियों और वस्तुओं में हैं। इस आन्दोलन में हैं, जो देश के लिए काम कर रहे हैं, या नहीं कर रहे हैं, सब में हैं। वे सब भगवान का ही काम कर रहे हैं। भगवान एक जमाने से इस राष्ट्र (भारत) के उत्थान की तैयारी करते रहे हैं, और अब इसे पूर्णता की ओर ले जाने का समय आ गया है, मुझे आपसे यही कहना है।

आपकी सभा का नाम ''धर्म रक्षिणी सभा'' है। इसलिए धर्म का रक्षण तथा हिन्दू धर्म का विश्वव्यापी जागरण, यही कार्य हमारे सामने है। परन्तु हिन्दू धर्म क्या है, वह धर्म क्या है जिसे हम सनातन धर्म कहते हैं? वह हिन्दू धर्म इसी नाते है कि हिन्दू राष्ट्र ने इसको अपना रखा है, क्योंकि इस प्रायद्वीप में समुद्र और हिमालय के एकान्त में यह फला-फूला है, क्योंकि इस पवित्र ओर प्राचीन भूमि पर युगों-युगों तक इसकी रक्षा का भार आर्यों को सोंपा गया था। फिर भी यह धर्म किसी एक देश की सीमा से बंधा नहीं है। जिसे हम हिन्दू धर्म कहते है, वह वास्तव में सनातन धर्म है, क्योंकि यही वह विश्वव्यापी धर्म है, जो दूसरे सभी धर्मों को अपने में समाहित करता है। यदि कोई धर्म विश्वव्यापी न हो तो वह सनातन भी नहीं ...शेष पृष्ठ १८ पर

महर्षि अरविन्द

महर्षि अरविन्द एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी,प्रखर स्वतंत्रता सेनानी, कवि, प्रकाण्ड पण्डित विद्वान, योगी और महान दार्शनिक थे। उन्होंने अपना जीवन भारत को आजादी दिलाने, नए मानव का निर्माण तथा पृथ्वी पर जीवन के विकास की दिशा में समर्पित कर दिया। उनका जन्म १५ अगस्त १८७२ को कलकत्ता में हुआ। उनके पिता कृष्णधन घोष उन्हें उच्च शिक्षा दिलाकर ऊँचे सरकारी पद पर देखना चाहते थे, अतः मात्र ७ वर्ष की आयु में ही उन्हें इंग्लैण्ड भेज दिया गया। १८ वर्ष की उम्र में आईसीएस की मूल परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। लेकिन उनके भाग्य में भारत का स्वतंत्रता आंदोलन तथा अध्यात्म व दर्शनशास्त्र क्षेत्रों में अतुलनीय योगदान लिखा था। आपने पांडिचेरी में एक आश्रम स्थापित किया। वेद, उपनिषद आदि शास्त्रों पर टीका लिखी। योग साधना पर मौलिक ग्रंथ लिखे। उनका पूरे विश्व में दर्शनशास्त्र पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है।

अविरत पथिक हो.वे.शेषाद्रि

आज तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का साहित्य हर भाषा में प्रचुर मात्रा में निर्माण हो रहा है; पर इस कार्य के प्रारंभ में जिन कार्यकर्ताओं की प्रमुख भूमिका रही, उनमें श्री होंगसन्द्र वेंकटरमैया शेषाद्रि जी का नाम शीर्ष पर है।

२६ मई,१९२६ को बंगलौर(बेंगलुरु) में जन्मे शेषाद्रि जी १९४३ में स्वयंसेवक बने। १९४६ में मैसूर विश्वविद्यालय से रसायन शास्त्र में प्रथम श्रेणी में स्वर्ण पदक पाकर उन्होंने एम.एस-सी. किया और अपना जीवन प्रचारक के नाते राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हेतु समर्पित कर दिया।

प्रांरभ में उनका कार्यक्षेत्र मंगलौर विभाग, फिर कर्नाटक प्रान्त और फिर पूरा दक्षिण भारत रहा। १९८६ तक वे दक्षिण में ही सक्रिय रहे। वे श्री यादवराव जोशी से बहुत प्रभावित थे। १९८७ से २००० तक वे संघ के सरकार्यवाह रहे। इस नाते उन्होंने पूरे भारत तथा विश्व के कुछ देशों में भी प्रवास किया।

कार्य की व्यस्तता के बाद भी वे प्रतिदिन लिखने के लिए समय निकाल लेते थे। वे दक्षिण के विक्रम साप्ताहिक, उत्थान मासिक, दिल्ली के पांचजन्य और आर्गनाइजर साप्ताहिक तथा लखनऊ के राष्ट्रधर्म मासिक के लिए प्राय: लिखते रहते थे। उनके लेखों की पाठक उत्सुकता से प्रतीक्षा करते थे।

उन्होंने संघ तथा अन्य हिन्दू साहित्य के प्रकाशन के लिए श्री यादवराव के निर्देशन में बंगलौर में 'राष्ट्रोत्थान परिषद्' की स्थापना की। सेवा कार्यों के विस्तार एवं संस्कृत के उत्थान के लिए भी उन्होंने सघन कार्य किया।

शेषाद्रि जी ने यों तो सौ से अधिक छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखीं; पर उन्होंने ही सर्वप्रथम द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी के भाषणों को 'बंच ऑफ थॉट्स' के रूप में संकलित किया। आज भी इसके संस्करण लगभग प्रतिवर्ष छपते हैं।

इसके अतिरिक्त कृतिरूप संघ दर्शन, युगावतार, और देश बँट गया, नान्य: पन्था, मूल्यांकन, द वे, हिन्दूज अब्रोड डाइलेमा, उजाले की ओर ... आदि उनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं। इन सबके कई भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। 'तोरबेरलु' को १९८२ में कन्नड़ साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया।

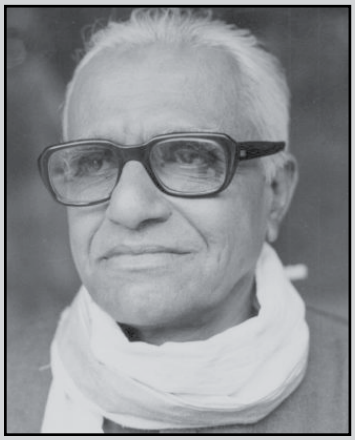

हो.वे.शेषाद्रि

'' संगठित लोकशक्ति के बल पर राष्ट्र बाह्य आक्रमणों को सफलता से निष्प्रभावी करता है। संघ इसी प्रकार के लोक संगठन में लगा है, ताकि आक्रमणों के अलावा समाज से भी छुआछूत, जातिभेद व अन्य दोष, जो आंतरिक दुर्बलतरा का कारण बनते हैं, समाप्त हों।''

श्री शेषाद्रि जी ने अमरीका, इंग्लैण्ड, केन्या, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में हिंदू जागरण के विभिन्न समारोहों के लिए प्रभावी प्रयास किए।

उनकी भाषण शैली भी अद्भुत थी। वे सरल एवं रोचक उदाहरण देकर अपनी बात श्रोताओं के मन में उतार देते थे। १९८४ में न्यूयार्क (अमरीका) के विश्व हिन्दू सम्मेलन तथा ब्रेडफोर्ड (ब्रिटेन) के हिन्दू संगम में उन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। उनके भाषणों से वहां लोग बहुत प्रभावित हुए।

शेषाद्रि जी कुशल संगठक थे। जो भी काम हाथ में लेते उसे पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पन्न करते थे। उनकी स्मरण शक्ति भी अद्भुत थी। वे प्रांत के प्रांत कार्यवाह, प्रांत प्रचारक और अंत में संघ के सरकार्यवाह के उच्च दायित्व तक पहुँचे।

अत्यधिक शारीरिक एवं मानसिक श्रम के कारण उनका शरीर अनेक रोगों का घर बन गया। जब चौथे सरसंघचालक रज्जू भैया अपने खराब स्वास्थ्य के कारण अवकाश लेना चाहते थे, तो सब कार्यकर्ता चाहते थे कि शेषाद्रि जी यह दायित्व संभाले; पर वे इसके लिए तैयार नहीं हुए।

उनका कहना था कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, अत: किसी युवा कार्यकर्ता को यह काम दिया जाये। अन्तत: सह सरकार्यवाह श्री सुदर्शन जी को यह दायित्व दिया गया। शेषाद्रि जी निरहंकार भाव से सह सरकार्यवाह और फिर प्रचारक प्रमुख के नाते कार्य करते रहे।

अन्तिम दिनों में वे बंगलौर कार्यालय पर रह रहे थे। वहाँ सायं शाखा पर फिसलने से उनके पैर की हड्डी टूट गयी। एक बार पहले भी उनकी कूल्हे की हड्डी टूट चुकी थी। इस बार इलाज के दौरान उनके शरीर में संक्रमण फैल गया। इससे उनके सब अंग क्रमश: निष्क्रिय होते चले गये।

कुछ दिन उन्हें चिकित्सालय में रखा गया। जब उन्हें लगा कि अब इस शरीर से संघ-कार्य संभव नहीं रह गया है, तो उन्होंने सब जीवन-रक्षक उपकरण हटवा दिये। उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए उन्हें संघ कार्यालय ले आया गया। वहीं १४ अगस्त २००५ की शाम को उनका देहान्त हो गया। ■

आदर्श कार्यकर्ता मधुकर राव भागवत

संघ के वर्तमान सरसंघचालक श्री मोहन भागवत के पिता श्री मधुकर राव भागवत एक आदर्श गृहस्थ कार्यकर्ता थे। गुजरात की भूमि पर संघ बीज को रोपने का श्रेय उन्हें ही है। विवाह से पूर्व और बाद में भी प्रचारक के नाते उन्होंने वहां कार्य किया। वे गुजरात के प्रथम प्रान्त प्रचारक थे।

श्री मधुकर राव का जन्म नागपुर के पास चन्द्रपुर में हुआ। उनके पिता श्री नारायण राव भागवत सुप्रसिद्ध वकील तथा जिला संघचालक थे। मधुकर राव १९२९ में चन्द्रपुर में ही स्वयंसेवक बने। वे उन भाग्यशाली व्यक्तियों में से थे, जिन्हें संघ निर्माता डा.हेडगेवार से प्रत्यक्ष सान्निध्य मिला। इसके फलस्वरूप उनके जीवन में संघ विचार तथा आचार की मजबूत नींव भरी गई। मैट्रिक उत्तीर्ण करने तक वे तृतीय वर्ष प्रशिक्षित हो गये।

संघ के घोष और संगीत में उनकी अच्छी रुचि थी। जब वे विद्यालयीन शिक्षा हेतु पुणे गए, तब पुणे की शाखा को इस प्रवीणता का बहुत लाभ हुआ। उनके निर्देशन में हरि विनायक दात्ये ने 'गायनी कला' नामक पुस्तक लिखी थी। पुणे से बी. एस-सी. कर उन्होंने १९४१ में श्री एकनाथ रानाडे के साथ कटनी (मध्यप्रदेश) में प्रचारक के नाते काम किया।

इसके बाद उन्हें गुजरात में संघ कार्य प्रारंभ करने हेतु भेजा गया। गुजरात में महात्मा गांधी के प्रति अत्यधिक श्रद्धा के कारण वहां अन्य किसी विचार अथवा आचार का विरोध होता था, लेकिन मधुकर राव एवं उनके साथ रह रहे प्रचारकों ने बड़ा धीरज रख कर प्रयास किए। उन्होंने क्रमश: सूरत, बड़ोदरा तथा कर्णावती में शाखा प्रारंभ कीं।

गुजरात और महाराष्ट्र की भाषा, खानपान और जीवनशैली में कई अन्तर हैं; संघ का काम करने के लिए वहां समरस होना आवश्यक था। अत: उन्होंने शीघ्र ही कई गुजराती परम्पराएं अपना लीं।

गुजराती जीवन से समरस होकर कई कार्यकर्ता तैयार किए। वे शाखा में आने वाले मराठी स्वयंसेवकों से भी गुजराती बोलने का आग्रह करते थे।

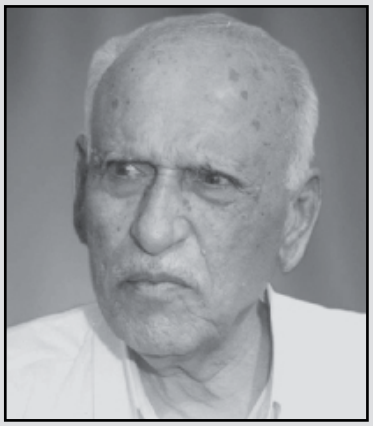

मधुकर राव भागवत

मधुर स्वभाव के कारण वे हर मिलने वाले पर अमिट छाप छोड़ते थे। १९४३-४४ से पूरे उत्तर भारत और सिंध (वर्तमान पाकिस्तान) के प्रशिक्षण वर्ग गुजरात में होने लगे। ऐसे एक वर्ग में श्री लालकृष्ण आडवाणी भी आये थे।

माता जी के देहांत के कारण १९४४ नें मधुकर राव को विवाह करना पड़ा। कुछ समय बाद पिताजी का भी देहांत हो गया; पर वे इनसे विचलित नहीं हुए। घर का वातावरण संभलते ही वे फिर निकल पड़े। पहले उन्हें श्री गुरुजी के साथ प्रवास की जिम्मेदारी दी गयी। फिर उन्हें गुजरात में प्रांत प्रचारक बनाया गया।

१९४७ में राजकोट तथा कर्णावती में हुए शिविरों में ४००० से भी अधिक स्वयंसेवकों ने पूर्ण गणवेश में भाग लिया था। १९४८ में प्रतिबंध लगने तक उनके संगठन कौशल से गुजरात के ११५ नगरों में शाखा प्रारंभ हो गयीं। प्रतिबंध काल में वे जेल में रहे तथा बाद में १९५१ तक प्रांत प्रचारक रहे।

प्रचारक जीवन से लौटकर उन्होंने नागपुर से कानून की उपाधि ली। उस समय उन पर नागपुर नगर और फिर प्रान्त कार्यवाह की जिम्मेदारी थी। चंद्रपुर में वकालत प्रारंभ करते समय वे जिला और फिर विभाग संघचालक बने।

उनकी पत्नी श्रीमती मालतीबाई भी राष्ट्र सेविका समिति, भगिनी समाज, वनवासी कल्याण आश्रम, जनसंघ आदि में सक्रिय थीं। १९७५ के आपातकाल में पति-पत्नी दोनों गिरफ्तार हुए।

बड़े पुत्र श्री मोहन भागवत अकोला में भूमिगत रहकर कार्य कर रहे थे। छोटे पुत्र रंजन ने नागपुर विद्यापीठ में सत्याग्रह किया। इस प्रकार पूरे परिवार ने तानाशाही के विरुद्ध हुए संघर्ष में आहुति दी।

संघ कार्य के साथ-साथ चंद्रपुर की अन्य सामाजिक गतिविधियों में भी मधुकर राव सक्रिय रहते थे। चन्द्रपुर में विधि कॉलेज की स्थापना के बाद अनेक वर्ष तक उन्होंने वहां नि:शुल्क पढ़ाया।

लोकमान्य तिलक स्मारक समिति के वे अध्यक्ष थे। ७० वर्ष की अवस्था में उन्होंने अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि के लिए हुई कारसेवा में भाग लिया। वे हर तरह से एक आदर्श कार्यकर्ता थे।

श्री मधुकर राव भागवत का ८५ वर्ष की आयु में १० अगस्त, २००१ को निधन हुआ। उनके प्रशंसक तथा गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी पुस्तक में उन्हें संगठन शास्त्र का जीवंत विद्यापीठ तथा पारसमणि सरीखी उपाधि ठीक ही दी है। ■

ज्योति जला निज प्राण की, बाती गढ़ बलिदान की। आओ हम सब चलें उतारें ,माँ की पावन आरती।।

देश भक्ति

स्वामी विवेकानन्द उन दिनों एक देश से दूसरे देश की यात्रा पर थे। इसी दौरान वे जापान की यात्रा पर गये। जापान के अनेक स्थानों पर स्वामी जी ने भ्रमण किया। एक दिन वे ट्रेन में बैठकर जापान के किसी दूसरे शहर जा रहे थे।

रास्ते में उनकी इच्छा हुई कि फलाहार किया जाए। उन्होंने बीच के अनेक स्टेशनों पर फलों की खोज की, किंतु कहीं भी फल उपलब्ध नहीं हुए। स्वामी जी कुछ निराश हो गये। और उनके मुँह से अनायास निकल पड़ा–'यह कैसा देश है, जहाँ फल भी नहीं मिलते?'

यह बात उनके पास बैठे जापानी युवक को बहुत बुरी लगी। वह जानता था कि फल कहाँ मिलते हैं। अगले स्टेशन पर वह उतरा और स्वामीजी के लिये ढेर सारे फल लेकर आया। उसने अत्यन्त स्नेह से वे फल स्वामीजी को भेंट किये। स्वामीजी ने उसे हृदय से धन्यवाद दिया और फलों के दाम पूछे, किंतु युवक ने उत्तर नहीं दिया।

तब स्वामीजी ने उससे कहा–' देखो भाई! संकोच मत करो। तुम इनकी कीमत चुकाये बगैर तो इन्हें लाये नहीं हो। इसलिये बेझिझक इनकी कीमत बता दो, वरना इन फलों का सेवन करना मेरे लिए मुश्किल हो जाएगा।'

तब युवक ने बड़ी ही विनम्रता से कहा– 'स्वामीजी!' इसका मूल्य यह है कि आप अपने देश में जाकर यह न कहें कि मेरे देश जापान में फल नहीं मिलते।'

यह सुनकर स्वामीजी जापानी युवक की देशभक्ति के कायल हो गये। कथा का सार यह है कि अपने देश की प्रतिष्ठा की किसी भी रूप में रक्षा करना देशभक्ति है, जो प्रत्येक नागरिक का परम दायित्व है। ■

बाल प्रश्नोत्तरी

*बाल मित्रों! यह प्रश्नोत्तरी पाथेय कण के **१६ जून** के अंक पर आधारित है। उक्त अंक को आप पढ़ेंगे तो नीचे दिये गये सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी सरलता से दे सकेंगे।*

१. पू. सुदर्शन जी का जन्म किस स्थान पर हुआ था?
(क) रायपुर (ख) दमोह (ग) मंडला (घ) चन्द्रपुर

२. पू. सुदर्शन जी सरसंघचालक किस वर्ष में बने?
(क) १९७९ (ख) १९९० (ग) २००० (घ) २००९

३. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चौथे सरसंघचालक कौन बने?
(क) बाला साहब देवरस (ख) रज्जू भैया (ग) मोहन जी भागवत (घ) सुदर्शन जी

४. वन्दे मातरम् गीत के रचयिता कौन है?
(क) रवीन्द्र नाथ टैगोर (ख)मैथिलीशरण गुप्त (ग) सुभद्रा कुमार चौहान (घ) बंकिम चन्द्र चटर्जी

५. झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का बलिदान कहां हुआ?
(क) झांसी (ख) ओरछा (ग)ग्वालियर (घ) कालपी

६. रानी लक्ष्मीबाई की आर्थिक सहायता करने वाले अमरचंद बाठिया कहां के मूल निवासी थे?
(क) बीकानेर (ख) नागौर (ग)ग्वालियर (घ) जयपुर

७. २३ दिसम्बर १९१२ को दिल्ली में लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फेंकने वाला क्रांतिकारी कौन था?
(क)रास बिहारी बोस (ख) शचीन्द्र नाथ सान्याल (ग) अतुल घोस (घ) बसन्त विश्वास

८. हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव किस हिंदू राजा के राज्याभिषेक का स्मरण कराता है?
(क) महाराणा प्रताप (ख) छत्रपति शिवाजी महाराज (ग) कृष्णदेव राय (घ) विक्रमादित्य

९. हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव किस तिथि को मनाया जाता है?
(क) ज्येष्ठ शुक्ल ११ (ख) ज्येष्ठ शुक्ल १२ (ग) ज्येष्ठ शुक्ल १३ (घ) ज्येष्ठ पूर्णिमा

१०. गोपाल भाई आशर प्रमुख रूप से किस संगठन से जुड़े हुए थे?
(क) विश्व हिन्दू परिषद (ख) भारतीय मजदूर संघ (ग) विद्यार्थी परिषद (घ) बजरंग दल

(उत्तर इसी अंक में हैं)

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं?

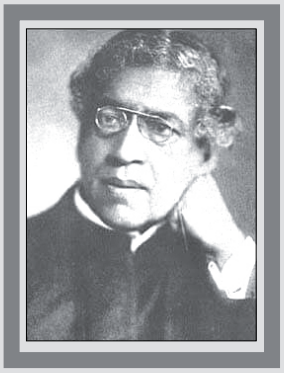

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- आप २२ वर्ष की आयु में जीव विज्ञान की पढ़ाई करने लंदन चले गये।
- रेडियो और सूक्ष्म तरंगों पर अध्ययन करने वाले प्रथम भारतीय वैज्ञानिक।
- आपने सिद्ध किया कि पौधों में भी जीवन और संवेदनाएं होती हैं।

(उत्तर इसी अंक में हैं)

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

भगवान श्रीकृष्ण को भगवान विष्णु का आठवां अवतार माना जाता है। भगवान श्रीकृष्ण का पूरा बचपन अद्भुत लीलाओं से भरा है, वहीं युवावस्था की कथाएं भी प्रसिद्ध हैं। कभी वह एक राजा के रूप में प्रजापालक बनते हैं, कभी भगवान के रूप में भक्तों के पालनहार, तो युद्ध के समय एक कुशल नीतिज्ञ तथा रणनीतिकार। उनके जीवन की सभी अवस्थाओं के प्रसंग परिस्थिति अनुसार अलग रूप को दिखा जन-जन को प्रेरित करते हैं।

जन्माष्टमी भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को कहा जाता है। पौराणिक ग्रंथों और शास्त्रों के अनुसार श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा की जेल में भाद्रपद महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में हुआ था। इस वर्ष यह तिथि ११ अगस्त २०२० को है। इस दिन सभी हिन्दू (विशेष रूप से वैष्णव सम्प्रदायी) भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करते हैं, भजन-कीर्तन करते हैं, उन्हें झूला झुलाते हैं तथा अगले दिन प्रातः काल तक व्रत करते हैं। मंदिरों में शृंगार तथा रोशनी की जाती है तथा भगवान श्री कृष्ण के जीवन-प्रसंगों की झांकियाँ सजाई जाती हैं। रात्रि में १२ बजे शंख तथा घंटों की ध्वनि से जन्मोत्सव की खबर चारों दिशाओं में गूंजती है। भगवान श्रीकृष्ण की आरती उतारी जाती है और प्रसाद (पंजीरी/पंचामृत) का वितरण किया जाता है। कई शहरों में दही हांडी प्रतियोगिता होती है।

पौराणिक विवरण– त्रेता युग के अंत और द्वापर के प्रारंभ काल में पापी कंस का जन्म हुआ, जो अपने पिता मथुरा नरेश उग्रसेन जी को कैद कर राजा बना। कंस की बहिन देवकी का विवाह यदुवंशी सरदार वासुदेव जी के साथ हुआ। विवाह के बाद कंस रथी बन अपनी बहिन को ससुराल छोड़ने जा रहा था तब आकाशवाणी हुई, ''हे कंस, जिस देवकी को तू बड़े प्रेम से ले जा रहा है, उसी में तेरा काल बसता है। इसी के गर्भ से उत्पन्न आठवाँ बालक तेरा वध करेगा।'' आकाशवाणी सुनकर कंस ने देवकी तथा वसुदेव जी को जेल में डाल दिया तथा वहां कड़ा पहरा लगा दिया।

भगवान के जन्म लेते ही कोठरी में प्रकाश फैल गया। भगवान प्रकट हुए और कहा कि मै नवजात बालक रूप धारण करता हूँ। आप मुझे तत्काल गोकुल में नन्द बाबा के घर पहुँचा दो और उनके घर से नवजात बच्ची को लाकर कंस को सौंप दें। वासुदेव जी ने नन्द बाबा के घर कृष्ण को पहुँचा, वहां से यशोदा की पुत्री को लाकर कंस को सुपुर्द किया। कंस ने जब उस कन्या को मारना चाहा तो वह कंस के हाथ से छूटकर आकाश में उड़ गई और देवी का रूप धारण कर बोली कि मुझे मारने से क्या लाभ है। तेरा संहारक तो गोकुल पहुंच गया है। यह देखकर कंस हतप्रभ और व्याकुल हो गया। उसने कृष्ण को मारने के लिये अनेक दैत्य गोकुल भेजे। श्रीकृष्ण ने अपनी अलौकिक माया से उन्हें मारा। बड़े होने पर उन्होंने कंस को मार उग्रसेन जी को राजगद्दी पर बिठाया और अपने माता-पिता को कैद से मुक्ति दिलाई।

अर्जुन को ज्ञान देना–दुर्बुद्धि तथा अधर्मी दुर्योधन द्वारा पांडवों के साथ छल कपट कर हस्तिनापुर राज्य पर अधिकार करने तथा वनवास व अज्ञातवास पूरा करने के बाद भी उनका राज्य नहीं लौटाने पर कुरूक्षेत्र में कौरव-पांडवों के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में यादव सेना कौरवों के पक्ष में लड़ी किन्तु भगवान श्रीकृष्ण धर्म के पक्षधर पांडवों के सहचर बने। युद्ध के मैदान में जब अर्जुन प्रतिपक्षी सेना में अपने रिश्तेदारों, गुरु द्रोणाचार्य तथा भीष्म को देख विषाद ग्रस्त हो अपने स्वधर्म (क्षत्रिय धर्म) से च्युत होने लगा तब योगेश्वर श्रीकृष्ण ने उसे तथा उसके माध्यम से समस्त मानव जाति को श्रीमद्भगवद् गीता का ज्ञान दिया।

गीता का कर्मयोग हमें अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर परोपकार करने, सारे काम ईश्वर को समर्पित करके करने तथा जो भी परिणाम हों, उन्हें ईश्वर का प्रसाद मानकर स्वीकार करने की शिक्षा देता है। इससे व्यक्ति में समत्व भाव बढ़ेगा। समत्व का अर्थ है, खुशी-गम, सुख-दुख, लाभ-हानि, मिलने-बिछुड़ने इत्यादि में मनुष्य का व्यवहार एक सा रहे। 'कर्मयोग' मनुष्य को संसार में रहते हुए तथा सारे कर्म करते हुए भी उनसे विरक्त रहने की शिक्षा देता है जो आज की भागदौड़ वाले जीवन के परिप्रेक्ष में तनाव रहित रहने का प्रमुख साधन है।

गीता में भक्ति की शिक्षा द्वारा चित्त एकाग्र करना सिखाता है, जो किसी भी काम को कुशलता के साथ करने के लिए आवश्यक है। श्रीकृष्ण ने ज्ञान को परिभाषित करते हुए मनुष्य को आत्मज्ञान की ओर उन्मुख किया अर्थात मनुष्य का वास्तविक स्वरूप यह शरीर या मन नहीं है, जिसे कि वह भ्रम के कारण मान बैठा है।

वह वास्तव में आत्मा है जो अनादि, निर्विकार, अजर, अमर, सर्वगत तथा सत्य है। इससे मनुष्य मृत्यु के डर, राग-द्वेष, काम-क्रोध इत्यादि से ऊपर उठ इस वास्तविकता का बोध करता है कि हम जिस भगवान (ब्रह्म) को बाहर ढूंढ़ रहे हैं, वास्तव में वह मनुष्य स्वयं है (अहम् ब्रह्मास्मि; तत् त्वम असि)। यही आत्मज्ञान है जिसकी अनुभूति होने के बाद मनुष्य राजा जनक की तरह संसार में रहते हुए भी संसार के सारे बंधनों तथा जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है और यही मोक्ष है।

इस ज्ञान की अनुभूति की दिशा में हम निरन्तर आगे बढ़ने (आध्यात्मिक उन्नति करने) के लिये प्रयत्न करें, तभी भगवान श्रीकृष्ण का जन्म-दिन (जन्माष्टमी) मनाना सार्थक होगा। सभी पाठकों को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएँ। ■

मेवात में एक और हिन्दू नाबालिग बालिका का अपहरण

अपहरण, दुष्कर्म और मतांतरण के लिए कुख्यात मेवात के काले इतिहास में गत ११ जुलाई को कट्टरपंथियों की एक और वारदात जुड़ गई, जब १६ वर्षीय नाबालिग हिन्दू बालिका के अपहरण का पता चला।

मामला लव जिहाद का बताया जा रहा है। १५ दिन पहले पिंकी (बदला हुआ नाम) निवासी नैवाड़ी, तहसील– नदबई, भरतपुर अपनी बुआ के घर ढ़ण्डका, भरतपुर में रहने आई थी। बुआ के घर के पास ही अख्तर का घर है। वहीं यह लड़की अख्तर के सम्पर्क में आई। कुछ दिन बुआ के पास रहकर पिंकी अपने घर चली गई। लेकिन यहां भी अख्तर ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। ११ जुलाई की रात ०३ बजे परिजनों ने देखा तो पिंकी घर पर नहीं थी। घर से गहने और नकदी भी गायब थे। आरोप है कि अख्तर लड़की को बहला फुसलाकर अपने साथ ले गया, जिसमें लड़के के परिजनों ने पूरी मदद की।

१२ जुलाई को लड़की के परिवार ने भरतपुर के हलैना थाने में इस बाबत प्राथमिकी दर्ज कराई है। परन्तु पुलिस अभी तक दोनों को सामने नहीं ला पाई है। स्थानीय लोगों का कहना है कि ये दोनों तीन दिन तक सहजपुर नंगली (अलवर) में अख्तर के रिश्तेदार बसरू खान के घर रूके। यह बसरू खान रामगढ़ के पूर्व प्रधान नसरू खान का भांजा है, जिसे कांग्रेसी विधायक साफिया खान का भी पूर्ण समर्थन प्राप्त है।

बलूच बोले– इमरान कर्ज उतारने के लिए चीन को बेच देंगे देश

पाकिस्तान सरकार ने बलूचिस्तान में तांबे और सोने के खनन के लिए चल रहे चीनी कम्पनी के प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने की अनुमति दी है। स्थानीय मीडिया के अनुसार बलूचिस्तान प्रांत के चागी जिले में स्थित सेंडक के करीब सेंडक कॉपर–गोल्ड प्रोजेक्ट का काम चीन की कम्पनी मेटालर्जिकल कॉरपोरेशन को दिया गया है।

२०१२ में इस चीनी कम्पनी के साथ ५ साल का अनुबंध हुआ था, जिसे अब १५ साल के लिए आगे बढ़ाया जा रहा है। जानकारों का कहना है कि इस खदान में ४० करोड़ टन से भी अधिक सोने और तांबे का भण्डार है। चीनी कम्पनी के साथ हुए समझौते को आगे बढ़ाने से बलोच लोगों में गुस्सा बढ़ता जा रहा है। उनका कहना है कि चीन उनके इलाके से खनिज चुरा रहा है।

उल्लेखनीय है कि श्रीलंका द्वारा १९७१–२०१२ के बीच चीन से ५ अरब डॉलर का कर्ज लिया गया था, जिसका भुगतान नहीं कर पाने पर उनके हम्बनटोटा बंदरगाह तथा उससे लगते १५००० एकड़ क्षेत्र को ९९ वर्ष के लीज पर २०१७ में चीन को सौंपना पड़ा।

गायिका मालिनी अवस्थी ने चमड़ा मुक्त रक्षाबंधन के प्रचार के लिए पेटा को लताड़ा

पद्मश्री से सम्मानित भारतीय लोक गायिका मालिनी अवस्थी ने अपने ट्वीट में पशु अधिकार संगठन पेटा (पशुओं के साथ नैतिक व्यवहार के पक्षधर लोग) को भारत में चमड़ा मुक्त रक्षाबन्धन का अभियान चलाने के लिए लताड़ा है। उन्होंने इस अभियान को बेतुका बताते हुए लिखा कि, ''हमने चमड़े की राखियों के बारे में आज तक कभी नहीं सुना है। आपका दुर्भावनापूर्ण अभियान अजीब और बीमार (मानसिकता वाला) है।''

पेटा ने इस अभियान द्वारा भाई–बहन के इस पवित्र त्योहार के दौरान किसी भी जानवर, विशेष रूप से गायों को नुकसान नहीं पहुँचाने और चमड़े से मुक्त सामान का विकल्प चुनने को कहा था।

मालिनी अवस्थी ने अगले ट्वीट में यह लिखा कि, ''रक्षा बंधन हिन्दुओं द्वारा मनाया जाने वाला त्योहार है, जो गाय की पूजा करते हैं। साथ ही उन्होंने पेटा से कुछ त्योहारों के विरोध में निवेश करने का आग्रह किया जो लोगों को जानवरों को मारने का आग्रह करते हैं तथा जानवरों की मौतों का जश्न मनाते हैं।''

भारत में कुछ गैर सरकारी संगठन हिन्दू त्योहारों–परम्पराओं के विरोध के लिए ही बने हैं, या कि उन्हें देशी–विदेशी फंड इसी काम के लिए मिलता है। दीपावली पर पटाखे नहीं चलाओ, होली पर रंग मत खेलो, मकर संक्रांति पर पतंग मत उड़ाओ अभियानों में वामपंथी–सेकुलर गठजोड़ का इन्हें पूर्ण सहयोग समर्थन मिलता है।

चीनी कम्पनियाँ सरकारी खरीद में नहीं लगा पायेगी बोली

गलवान घाटी में चीनी सैनिकों की कायराना हरकत के बाद से ही भारत सरकार चीन के खिलाफ कड़े फैसले ले रही है। पिछले दिनों सरकार ने नियमों में संशोधन द्वारा सरकारी खरीद में चीनी कम्पनियों की भागीदारी प्रतिबंधित कर दी है। अब केन्द्र सरकार, राज्य सरकार तथा किसी भी सरकारी, सार्वजनिक उपक्रमों की खरीद में चीनी कम्पनियाँ बोली नहीं लगा सकती।

इस संशोधन का प्रभाव चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और पाकिस्तान पर पड़ेगा। इस नियम में ऐसे देशों को छूट दी गई है, जिन्हें विकास के लिए भारत से सहायता मिलती है। अतः ये प्रावधान चीन तथा पाकिस्तान पर ही प्रभावी होंगे।

बाल प्रश्नोत्तरी - १.(क) २.(ग) ३.(ख) ४.(घ) ५.(ग) ६.(क) ७.(घ) ८.(ख) ९.(ग) १०.(क)

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला

त्रावणकोर का पूर्व शाही परिवार ही संभालेगा प्रबंधन

केरल के ऐतिहासिक श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के प्रशासन और उसकी सम्पत्तियों को लेकर चल रहे मामले में गत १३ जुलाई को दिये गये महत्वपूर्ण फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि मंदिर के प्रबन्धन का अधिकार पूर्व शाही परिवार के पास रहेगा। अंतरिम व्यवस्था के तौर पर तिरुअनंतपुरम के जिला जज मंदिर मामलों की कमेटी के मुखिया होंगे। **नई कमेटी बनने तक यह व्यवस्था लागू रहेगी।** नई कमेटी के सभी सदस्य हिन्दू होने चाहिए। कोर्ट ने यह भी कहा है कि आखिरी राजा के निधन होने का यह मतलब नहीं है कि मंदिर का मेनेजमेंट सरकार संभाले।

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर को ६ वीं शताब्दी में त्रावणकोर के राजाओं ने बनवाया था। डच नेवी को धूल चटाने वाले प्रतापी राजा मार्तण्ड वर्मा ने अपने शासनकाल (१७२९-१७५८) में इसको भव्य तथा विशाल बनवाया। उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति मंदिर को दान करके, स्वयं भगवान विष्णु के दास बन शासन किया था।

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से अन्य हिन्दू मंदिरों के भी सरकारी नियंत्रण से मुक्तहोने की आस जगी है। बहुसंख्यक समाज होने के नाते स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही हिन्दुओं की आस्था और धार्मिक भावनाओं के प्रति सरकारों ने असंवेदनशीलता का ही परिचय दिया है। केरल की वामपंथी, आंध्रप्रदेश में ईसाईयत समर्थक तथा ऐसी मानसिकता की सरकारें हिन्दू मंदिरों से प्राप्त धन को अन्य धर्मों के बढ़ावे के लिये खर्च करते रहे हैं।

अयोध्या में लगेगी जयपुर में बनी महाराणा प्रताप की अष्टधातु की प्रतिमा

जयपुर अपनी वास्तु व मूर्ति कला के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध है। अब इसका एक उत्कृष्ट नमूना मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की जन्मस्थली अयोध्या में देखने को मिलेगा। स्वाभिमानी एवं देशभक्ति के प्रतीक वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की विशाल एवं भव्य अष्टधातु की प्रतिमा वहाँ लगने जा रही है। इस मूर्ति का निर्माण जयपुर में हो रहा है।

प्रतिमा में महाराणा प्रताप के चेतक को बहुत ही रोबदार व आकर्षक बनाया गया है। प्रतिमा की ऊंचाई साढ़े १२ फीट है व वजन १५०० किलोग्राम है। महाराणा प्रताप के हाथ में १० फीट लंबा भाला है और दूसरे हाथ की तरफ ५ फीट की दो तलवारें लगाई हुई हैं। महाराणा प्रताप की विशाल प्रतिमा को चमकाने का कार्य अंतिम चरण में है।

एएमयू की छात्रा को मिली पीतल का हिजाब पहनाने की धमकी

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) में बुलन्दशहर की रहने वाली गैर मुस्लिम छात्रा को पीतल का हिजाब पहनाने की धमकी का मामला जानकारी में आया है। छात्रा ने अपने एक साथी छात्र के खिलाफ इस बाबत शिकायत दर्ज कराई है।

शिकायत के अनुसार बेचलर ऑफ आर्कीटेक्ट के छात्र ने सोशल मीडिया साइट पर छात्रा के खिलाफ असभ्य भाषा का प्रयोग किया था। छात्रा ने कुछ कॉलेजों में खुद को कवर करने के लिए मजबूर होने वाली लड़कियों को लेकर अपनी राय पोस्ट की थी, जिसके बाद उसे ये धमकियाँ मिलीं।

छात्रा की इसी पोस्ट पर एएमयू के तमाम साथी आक्रोशित हो उठे हैं और अभद्र टिप्पणी कर रहे हैं। आरोप है कि उसके एक सहपाठी ने सोशल मीडिया पर उसे चेतावनी दी है कि उसे अगर एएमयू में रहकर पढ़ना है तो वहां के तौर तरीकों से चलना होगा। जब विश्वविद्यालय खुलेगा तो हम हिजाब पहनना सिखा देंगे।

छात्रा ने यह भी आरोप लगाया कि उसने सीएए/एनआरसी बिल का समर्थन किया था, तब से ही उसे इन लोगों द्वारा निशाना बनाया जा रहा था।

अब ईसाई समुदाय चीन सरकार के निशाने पर

चीन में मुस्लिमों के बाद अब ईसाई समुदाय की पहचान खतरे में पड़ती नजर आ रही है। यहां क्रिश्चियन्स को आदेश दिया गया है कि वे **घरों में लगी जीसस क्राइस्ट (प्रभु ईशू) के फोटो और क्रास तुरन्त हटाएँ और इनके स्थान पर कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं विशेषकर पार्टी के संस्थापक माओत्से तुंग तथा वर्तमान राष्ट्रपति शी जिनपिंग की फोटो लगाएं।**

कुछ दिन पहले देश के चार राज्यों में सैकड़ों गिरजाघरों के बाहर लगे धार्मिक चिन्हों को हटाया या तोड़ा जा चुका है। हुआनान प्रांत में गत १८-१९ जुलाई को सरकारी अमला पहुँचा और शिवान क्राइस्ट चर्च के बाहर लगे बड़े क्रास को हटाने को कहा। इसके बाद वहां काफी लोग जुट गये और विरोध करने लगे। लेकिन विरोध को दरकिनार कर पुलिस की सहायता से क्रास को ढ़हा दिया गया। इससे पहले ७ जुलाई को शिंजियांग में भी यही हुआ था।

पिछले साल जिनपिंग सरकार ने एक आदेश जारी कर देश में किसी भी तरह की धार्मिक पुस्तकों का इस्तेमाल तथा ट्रांसलेशन पर प्रतिबंध लगाया है। आदेश का उल्लंघन करने वालों को सजा की धमकी दी गई है। उल्लेखनीय है कि इस प्रांत के दस लाख से ज्यादा उईगर मुसलमान डिटेंशन कैम्पों में रखे गये हैं।

प. बंगाल बीजेपी विधायक देबेन्द्र नाथ रे की हत्या

प. बंगाल के हेमताबाद से विधायक देबेन्द्र नाथ रे का शव गत १३ जुलाई को उत्तर दिनाजपुर जिले में उनके गांव बिदाल में अपने घर से कुछ दूरी पर फांसी पर लटका पाया गया। विधायक के परिवार ने आरोप लगाया है कि उनका राजनीतिक जीवन में विपक्षी दल का होने के कारण उनकी हत्या की गई है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने हत्या के पीछे तृणमूल कांग्रेस का हाथ बताया है।

दार्जिलिंग से भाजपा सांसद राजू बिष्ट का आरोप है कि जब राज्य में निर्वाचित जनप्रतिनिधि सुरक्षित नहीं हैं, तो फिर आम आदमी की बात ही छोड़ दीजिए। उनका आरोप है कि बंगाल में हिंसा, हत्या और हाथापाई की राजनीति ऐसे स्तर पर पहुँच गई है कि एक विधायक की निर्दयता से हत्या कर दी जाती है।

पुलिस ने पहले आत्म हत्या बताया था, किन्तु परिवार द्वारा आरोप लगाने के बाद इस मामले में हत्या का केस दर्ज किया है और राज्य की सीआईडी को जांच दी गई है। विधायक की मौत का सच क्या है, यह तो जांच पूरी होने के बाद ही पता लगेगा किन्तु इससे राज्य की कानून व्यवस्था पर सवाल उठना स्वाभाविक है। तृणमूल कांग्रेस शासित प. बंगाल अब हिंसा के मामले में सबसे आगे बढ़ रहा है और चुनावी वर्ष में राजनीतिक हिंसा खतरनाक रूप ले सकती है।

विद्या भारती संस्थान से जुड़े विद्यालयों ने परचम लहराया

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा पिछले दिनों जारी किए गए १२वीं कक्षा के विज्ञान वर्ग के परिणाम में विद्या भारती संस्थान से जुड़े विद्यालयों ने परचम लहराया है। पूरे राजस्थान में विद्या भारती विद्यालयों का परिणाम ९५.४२% रहा है। इसके साथ ही आधा दर्जन विद्यार्थियों ने ९५% से अधिक अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। परिणाम में सर्वाधिक अंक जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर झोटवाड़ा के छात्र आयुष गोयल ने ९८.८०%व बाड़मेर जिले के आविमं गडरा रोड के छात्र अभिषेक जोशी ने ९८% प्राप्त किए हैं।

बोर्ड द्वारा जारी किए गए परिणाम में विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत १६८३ विद्यार्थियों में से १३०५ प्रथम श्रेणी, २९९ द्वितीय व २ छात्र तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं। वहीं पूरे राजस्थान में ४८ विद्यार्थियों ने ९० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं।

पाकिस्तान में एक और हिन्दू लड़की का अपहरण

पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दू, सिख और ईसाई अल्पसंख्यकों पर धार्मिक अत्याचार की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। धर्म परिवर्तन के लिए बदनाम सिंध प्रांत के मीरपुर खास से १२ साल की एक नाबालिग हिन्दू लड़की मूमल भील का मुस्लिम कट्टरपंथियों ने अपहरण कर लिया है। बताया जा रहा है कि इस लड़की का जबरन धर्म परिवर्तन कर निकाह करवाने की तैयारी की जा रही है।

वायस ऑफ पाकिस्तान मॉइनेरिटी के अनुसार परिवार वालों ने जब पुलिस को सूचना दी तो उन्होंने भी कुछ नहीं किया। थक हारकर परिवार अब भगवान भरोसे है क्योंकि इन कट्टरपंथियों के आगे अल्पसंख्यक हिन्दू समुदाय कुछ नहीं कर सकता। अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के लिए बदनाम सिंध में यह पहली घटना नहीं है। जून के अंतिम सप्ताह में आई रिपोर्ट के अनुसार, सिंध प्रांत में बड़े स्तर पर हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कराकर उन्हें मुस्लिम बनाए जाने का मामला सामने आया था। सिंध के बादिन में १०२ हिन्दुओं को जबरन इस्लाम कबूल कराया गया।

मानवाधिकार संस्था मूवमेंट फॉर सॉलिडेरिटी एंड पीस के अनुसार, पाकिस्तान में हर साल १००० से ज्यादा ईसाई और हिन्दू महिलाओं या लड़कियों का अपहरण किया जाता है। जिसके बाद उनका धर्म परिवर्तन करवा कर निकाह करवा दिया जाता है। पीड़ितों में ज्यादातर की उम्र १२ साल से २५ के बीच में होती है।

ई -कॉमर्स कम्पनियों को बताना होगा, किस देश का है आयातित उत्पाद

भारत-चीन सीमा विवाद के बाद चीन के खिलाफ पूरा देश एकजुट हो चीनी कम्पनियों और चीनी उत्पाद का बहिष्कार कर रहा है। लेकिन उपभोक्ता के सामने समस्या थी चीनी सामान के पहचान की। क्योंकि ई-कॉमर्स कम्पनियाँ कई उत्पादों को अपनी सहायक कम्पनियों की ओर से बेचती हैं, जिनके उत्पादक देश की कोई जानकारी उपलब्ध नहीं होती।

सरकार के इस निर्णय से अमेजन, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील जैसी ई-कॉमर्स कम्पनियों को अब उनके मंच पर बिकने वाले आयातित उत्पादों के मूल देश का नाम दर्शाना होगा अर्थात यह बताना होगा कि आयातित उत्पाद किस देश का है।

सरकार ने अपना यह निर्णय एक शपथपत्र में दिल्ली उच्च न्यायालय को प्रस्तुत किया है जहां अधिवक्ता अमित शुक्ला की ओर से दायर जनहित याचिका में केन्द्र को यह निर्देश देने का आग्रह किया गया था कि ई-कॉमर्स मंचों पर बिकने वाले उत्पादों पर उनका निर्माण करने वाले देशों का नाम दर्शाया जाना चाहिए।

देश में कार्यरत ई-कॉमर्स कम्पनियों ने सरकार के इस निर्णय पर सहमति दी है।

राष्ट्रीय सिख संगत के द्वारा राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

राष्ट्रीय सिख संगत के द्वारा गत १९ जुलाई को ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुरु नानक देव जी महाराज की शिक्षा और महत्व'' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसका आगाज दिल्ली विश्वविद्यालय के डिप्टी प्रॉक्टर डॉ. राजकुमार फलवारिया ने किया।

वेबिनार में भारत के विभिन्न राज्यों से ४७० से ज्यादा बुद्धिजीवियों, प्रोफेसर, वकीलों व ब्यूरोक्रेट्स ने भाग लिया। वेबिनार के सभी वक्ताओं ने गुरु नानकदेवजी की शिक्षा के महत्त्व के बारे में चर्चा की और युवाओं को गुरु नानकदेव जी की शिक्षाओं से प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही गुरु परम्परा ने भारतीय संस्कृति को एक नया रूप दिया है।

इस वेबिनार के मूल में सभी वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि भारत के विभिन्न गुरुओं ने किस तरह समाज को संगठित करने का काम किया है, इस बात को लोग जानें।

कार्यक्रम का संचालन छगनलाल प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय ने किया। इस कार्यक्रम में देश भर से कई प्रोफेसर, रिसर्च स्कॉलर, समाज सेवी व अन्य लोग सम्मिलित हुए। समापन और धन्यवाद प्रस्ताव पुर्व मुख्य अभियंता राजस्थान ताराचंद जाटोल ने किया।

झारखंड के घाटशिला की संत नंदलाल स्मृति विद्या मंदिर में एलकेजी तथा यूकेजी के बच्चों को शिक्षिका शैली परवीन ने होमवर्क में पाकिस्तान तथा बांग्लादेश के राष्ट्रगान याद करने को दिए। अभिभावकों की शिकायत के बाद इसे हटाया गया। धर्म विशेष के लोगों को भारत माता की जय और वंदे मातरम् बोलने से परहेज है लेकिन पाकिस्तान प्रेम जग जाहिर है।

किसान संघ का प्रदेशव्यापी धरना प्रदर्शन

सरकार के विरुद्ध भारतीय किसान संघ ने २१ जुलाई को प्रदेशव्यापी धरना प्रदर्शन किए। ये धरना प्रदर्शन किसान हित की विभिन्न मांगों को लेकर थे। प्रदर्शन के बाद सरकार को ज्ञापन भी सौंपे गए। सभी जिला मुख्यालयों पर आयोजित हुए प्रदर्शनों में बड़ी संख्या में किसान शामिल हुए।

किसानों द्वारा सौंपे गए ज्ञापन में बिजली बिल माफ करने, बिजली अनुदान दोबारा शुरू कराने, सिंगल फेज कृषि कनेक्शन जारी कराने, किसानों का शोषण बंद करने व समर्थन मूल्य पर खरीद करने की मांग की। इसके साथ ही टिड्डी नियंत्रण के लिए किसानों को केमिकल व डीजल नि:शुल्क उपलब्ध कराने, टिड्डियों से फसल खराबे का मुआवजा दिलाने, प्रधानमंत्री फसल बीमा का पैसा दिलाने की मांग की है। किसानों ने फसलों की सिंचाई के लिए नहरों से पानी दिलाने व विपणन की सुविधाएं दिलाने समेत नरेगा कार्यों से किसानों को जोड़ने और गोचर भूमि से अतिक्रमण हटाने की पुरजोर मांग की है।

भारतीय मजदूर संघ ने मनाया ६६वां स्थापना दिवस

भारतीय मजदूर संघ का ६६वां स्थापना दिवस समारोह सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए मनाया गया। जिला जयपुर की तरफ से भारतीय मजदूर संघ प्रदेश कार्यालय में स्थापना दिवस के मौके पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक निंबाराम, भामसं के प्रदेशाध्यक्ष विशनसिंह तंवर, महामंत्री दीनानाथ रूथला संगठन मंत्री हरिमोहन शर्मा के साथ जयपुर सांसद रामचरण बोहरा, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया तथा पूर्व मंत्री अरुण चतुर्वेदी ने कार्यक्रम में शिरकत की।

इस अवसर पर भामसं के संस्थापक दंतोपन्त ठेंगड़ी के जन्मशती वर्ष की जानकारी दी गई तथा वर्तमान में सरकारों के विनिवेश, निजीकरण और श्रम कानूनों में मजदूर विरोधी संशोधनों पर प्रकाश डाला गया।

भारत विकास परिषद का ५८वां स्थापना दिवस

सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा और समर्पण का भाव लेकर समाज के पीड़ितों की सेवा के लिए काम कर रहे संगठन भारत विकास परिषद ने १० जुलाई को अपना ५८वां स्थापना दिवस मनाया।

इस अवसर पर जयपुर महानगर में सघन पौधरोपण, बालिका को साइकिल देना तथा तुलसी पौधा वितरण आदि विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए। भारत विकास परिषद द्वारा भारत को जानो प्रतियोगिता के माध्यम से विभिन्न विद्यालयों के २१ हजार छात्र-छात्राओं को भारत की सांस्कृतिक विरासत से परिचय कराया गया।

इसके साथ ही प्रतिवर्ष राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता, गुरु वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम, वन विहार, सरहद पूजन कार्यक्रम, वंदे मातरम पुरस्कार वितरण, मकर सक्रांति पर महिलाओं द्वारा वंचित बस्ती के लोगों को १४ वस्तुएं दान करना, वनवासी सहायता, सामूहिक विवाह सम्मेलन, विद्यालयों में जरूरतमंद बच्चों को स्कूल ड्रेस व पाठ्य सामग्री वितरण, महिला स्वावलंबन के लिए सिलाई मशीन वितरण आदि प्रकल्प चलाए जा रहे हैं। वहीं कोरोना काल में खाद्य सामग्री वितरण, गोशालाओं में चारा व मास्क वितरण भी किए गए।

उत्तर महापुरुष पहचानो -जगदीश चन्द्र बसु

वनवासी संस्कृति के संवाहक जगदेव राम उरांव

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष आदरणीय श्री जगदेवराम जी उरांव का आज (१५ जुलाई २०२० को) अचानक देहावसान हम सभी संघ स्वयंसेवक तथा कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के लिए दु:ख से स्तिमित कर देने वाला नियति का निर्मम आघात है। किशोरावस्था में ही वे कल्याण आश्रम तथा संघ के संपर्क में आए व तब से उनका ध्येयसमर्पित जीवन ध्येय की कठिन साधना में आखरी सांस तक संलग्न रहा। अपने मृदु स्वभाव व परिपक्व बुद्धि के कारण वे सभी कार्यकर्ताओं में प्रेम व सम्मान के अधिकारी बन, कल्याण आश्रम के माध्यम से समाज के वनवासी बंधुओं की आवाज बनकर, नेतृत्व के रूप में उभरे। कल्याण आश्रम के कार्य के साथ ही उनके कर्तृत्व का विस्तार होकर उस कार्य के समान ही वह सभी कार्यकर्ताओं के मन को संभालने वाले तथा कल्याण आश्रम की वैचारिक प्रस्थापना को दृढ़ रखने वाले आधार रूप वटवृक्ष के रूप में उभरे। उनके इस अचानक देहावसान के कारण उनके परिवार जन, कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता तथा संघ के स्वयंसेवकों को शीतल छाया देने वाला एक वटवृक्ष चला गया है। हम सब समदु:खी हैं।

इस वेदनादायी प्रसंग में जिस कार्य के लिए स्व. जगदेवराम जी ने अपने संपूर्ण जीवन का उत्सर्ग किया, उस कार्य को उसकी पूर्ण सिद्धि तक पहुँचाने का कर्तव्य भी अभी शेष है। उस कर्तव्य पथ पर सतत आगे बढ़ते रहने का धैर्य, तितीक्षा, संगठन कुशलता इत्यादि गुणों का भी स्वर्गीय जगदेवराम जी की स्मृति ही हमको प्रदान करती रहेगी। उनकी इस पवित्र स्मृति में अपनी व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए दिवंगत जीव की शांति व सद्गति के लिए हम प्रार्थना करते हैं।

मोहन भागवत, सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

सुरेश (भय्याजी) जोशी,सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

पाथेय कण परिवार श्री जगदेवराम उरांव को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

पृष्ठ ९ का शेष... हो सकता। कोई संकुचित, सांप्रदायिक, अनुदार धर्म सीमित समय और सीमित उद्देश्य के लिए ही रह सकता है। यही एक ऐसा धर्म है जो अपने में विज्ञान के अविष्कारों तथा दर्शनशास्त्र के चिंतनों का पूर्वानुमान करके उन्हें स्वयं में समाहित कर जड़वाद (मेटेरियलिज्म) पर विजय प्राप्त कर सकता है। यही एक धर्म है जो मानव-जाति के दिल में यह बात बिठा देता है कि भगवान हमारे निकट हैं। यह उन सभी साधनों/साधनाओं को अपने में शामिल करता है, जिनके द्वारा व्यक्ति भगवत्प्राप्ति कर सकता है। यही एक ऐसा धर्म है जो प्रतिपल सभी धर्मों के माने हुए इस सत्य पर जोर देता है कि भगवान हर व्यक्ति और हर वस्तु में है, तथा हम उन्हीं में विचरण करते हैं और उन्हीं में हमारा अस्तित्व है। यह एक धर्म है जो संसार को दिखा देता है कि संसार वासुदेव की लीला है, यह संसार उन्हीं में है तथा उन्हीं से चेतन है। यही एक धर्म है जो हमें यह बताता है कि भगवान की इस लीला में हम अपनी भूमिका अच्छी से अच्छी तरह कैसे निभा सकते हैं। यही एक धर्म है जो जीवन की छोटी से छोटी बात को भी धर्म से अलग नहीं करता, जो यह जानता है कि अमरता क्या है और जिसने मृत्यु की वास्तविकता (भय) को मिटा दिया है।

यही वे शब्द हैं जो आपको सुनाने के लिए भगवान द्वारा मुझसे बुलवाए गये हैं, इससे अधिक मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं है। पहले भी एक बार मेरे अंदर यह शक्ति काम कर रही थी, तो मैंने आपसे कहा था कि यह (स्वतंत्रता) आन्दोलन राजनीतिक आन्दोलन नहीं है और राष्ट्रीयता (नेशनेलिज्म) राजनीति नहीं, बल्कि एक धर्म है, एक विश्वास है। इसी बात को आज मैं अलग तरह से कहता हूँ कि *सनातन धर्म ही हमारे लिये राष्ट्रीयता है। यह हिन्दू राष्ट्र सनातन धर्म को लेकर ही पैदा हुआ है, उसी के साथ चलता और उसी के साथ आगे बढ़ता है।* **सनातन धर्म ही है राष्ट्रीयता।** ■

श्रेष्ठ संतान के बगैर श्रेष्ठ राष्ट्र की कल्पना नहीं

श्रेष्ठ संतान के बगैर श्रेष्ठ राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। अगर हम दुनिया में सुख शांति की स्थापना चाहते हैं तो श्रेष्ठ संतति निर्माण को हमें अभियान के रूप में लेना होगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर पश्चिम क्षेत्र प्रचारक निंबाराम ने यह बात २१ जुलाई शाम को आरोग्य भारती द्वारा आयोजित गर्भ संस्कार विषयक वेबिनार व्याख्यान के दौरान कही। क्षेत्र प्रचारक ने कहा कि माता जीजाबाई ने विपरीत परिस्थितियों में राष्ट्रभक्ति के भाव से ओतप्रोत बालक को जन्म दिया। ऐसे वीर शिवा ने मुगलों को परास्त किया था। व्याख्यान के मुख्य वक्ता गुजरात आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय के पूर्व प्राचार्य व आरोग्य भारती की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ. हितेश जानी ने कहा कि वैदिक परंपरागत गर्भ संस्कार में हम अपने गोत्र में विवाह नहीं करते। इससे पूर्व कार्यक्रम का उद्घाटन भगवान धन्वन्तरी के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया गया। आरोग्य भारती के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य वैद्य केदारनाथ शर्मा ने सभी धन्यवाद देते हुए कोरोना काल की गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में गर्भ संस्कार पर मरीजों पर किए गए प्रयोगों के अनुभव साझा भी किए गए।

राष्ट्रोन्नायक आचार्य शंकर

३४

आलेख व चित्र
ब्रजराज राजावत

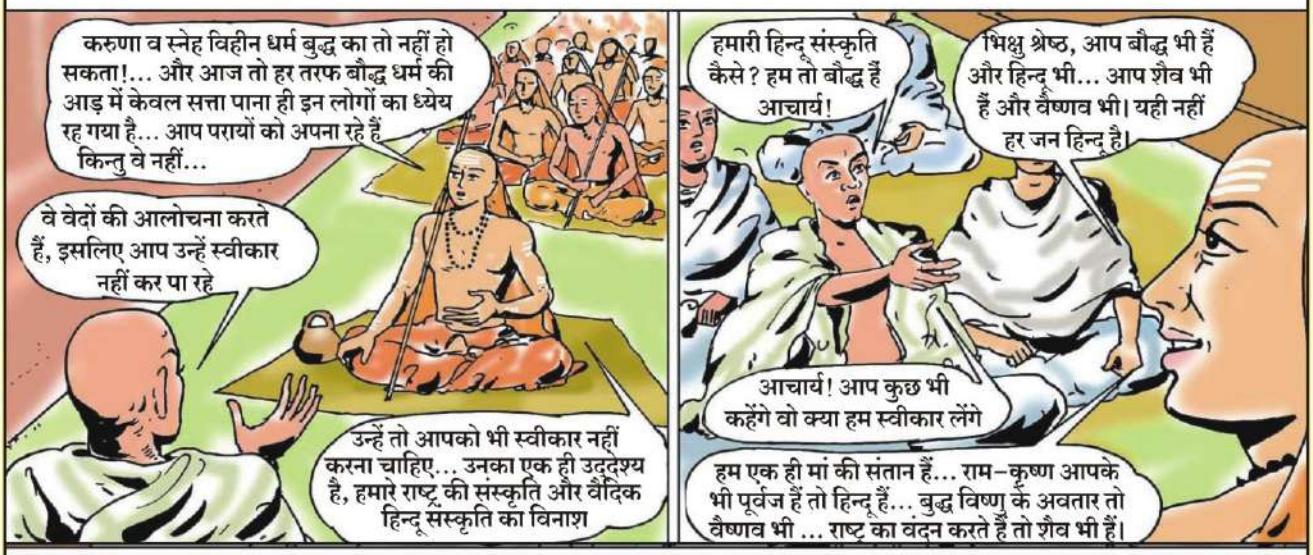

पाक्षिक
पाथेय कण
१ अगस्त २०२०

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. ४८७६०/८७ अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /२०२/२०१८-२० JAIPUR CITY/ WPP - ०१/२०१८-२०

भारतीय अभ्युत्थान समिति द्वारा प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए निःशुल्क दवा वितरण

भारतीय किसान संघ द्वारा प्रदेश व्यापी धरना प्रदर्शन

भारत विकास परिषद द्वारा १० जुलाई को ८५वां स्थापना दिवस मनाया गया

भारतीय मजदूर संघ परिवहन व विद्युत कर्मियों ने किया विरोध प्रदर्शन

विरुपाक्ष मंदिर, हम्पी

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-१०,२२ गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, ४, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-३०२०१७
सम्पादकः मेघराज खत्री
प्रेषण दिनांक १,२,३,४ व ५अगस्त २०२० आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,